



चेतना

सोलहवाँ अंक

मार्च, 2004



महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
बिहार, पटना

चेतना परिवार



बैठे हुए हैं बायें से पत्रिका के परामर्शी श्री ए. के. श्रीवास्तव, संरक्षक श्री राकेश कुमार वर्मा एवं परामर्शी श्री यू. एस. प्रसाद

खड़े हैं बायें से श्री अजित कुमार सिन्हा, स. ले. अधि. (जी.डी.), पत्रिका के सम्पादक श्री नरेन्द्र सिंह 'नाहर' एवं प्रधान सम्पादक श्री जानकी नन्दन प्रसाद



सत्यमेव जयते

चेतना

त्रैमासिक हिन्दी पत्रिका
सोलहवाँ अंक

महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), बिहार, पटना का कार्यालय
महालेखाकार भवन

बीरचन्द पटेल पथ, पटना - 800 001

चेतना

स्वत्वाधिकार : महालेखाकार (ले० एवं ह०), बिहार, पटना

प्रकाशन : 'चेतना'
(त्रैमासिक हिन्दी पत्रिका)

प्रकाशक : महालेखाकार (ले० एवं ह०), बिहार, पटना का कार्यालय
महालेखाकार भवन, वीरचन्द पटेल पथ,
पटना - 800 001

अंक : सोलहवाँ
(मार्च, 2004)

मूल्य : राष्ट्रभाषा एवं राजभाषा हिन्दी की सतत सेवा

मुद्रक : वातायन प्रिंटिंग
फ्रेजर रोड, पटना - 1
दूरभाष : 9431426300, 2250825

चेतना परिवार

संरक्षक :

श्री राकेश कुमार वर्मा

महालेखाकार (ले. एवं ह०), बिहार, पटना



प्रकाशन परामर्शदातृ समिति :



श्री यू. एस. प्रसाद

उपमहालेखाकार, बिहार, पटना



श्री ए. के. श्रीवास्तव

उपमहालेखाकार, बिहार, पटना



प्रधान सम्पादक :

श्री जानकी नन्दन प्रसाद

वरिष्ठ लेखा अधिकारी, हिन्दी कक्ष



सम्पादक :

श्री नरेन्द्र कुमार सिंह 'नाहर'

अनु. अधि., हिन्दी कक्ष

चेतना

अनुक्रमणिका

क्रम सं०	विषय	रचनाएँ	लेखक	पृष्ठ सं०
1.	चेतना परिवार			
2.	अनुक्रमणिका			
3.	महालेखाकार का संदेश			- 5
4.	उपमहालेखाकार का संदेश			- 6
5.	सम्पादकीय			- 7
6.	आपके पत्र			- 8
7.	ठोकर	कहानी	श्री मनमीत कुमार	- 13
8.	जागरण दिवस	कविता	श्री नरेन्द्र कुमार सिंह 'नाहर'	- 16
9.	यात्रा- वृत्तान्त	संस्मरण	श्री शिव दयाल सिंह	- 19
10.	ज्ञान मोक्षप्रद वेद बखाना	लेख	श्री दिलीप कुमार सिंह	- 23
11.	गरीबी हटाओ	कविता	सुश्री अदिति	- 32
12.	प्रजातंत्र का कमाल	निबन्ध	श्री राम सुभग राम	- 33
13.	एक और पल	कविता	श्री पीयूष ओझा	- 35
14.	अतीत	लघु निबन्ध	श्री बंशीधर मिश्र	- 36
15.	बढ़ती जनसंख्या-समस्या एवं निदान	निबन्ध	श्री हरेराम प्रधान	- 38
16.	आतंकवाद	कविता	श्री विजय प्रकाश	- 42
17.	क्रिसमस	लेख	श्री रमा प्रसाद चक्रवर्ती	- 44
18.	नरसंहार	कविता	श्री राजू कुमार सिंह	- 47
19.	सिस्टर सरला	कथा	श्री कृष्ण मुरारी जयपुरियार	- 49
20.	चुनावी साल	कविता	श्री मनोज कुमार न०-॥	- 53
21.	नशे से सावधान	लेख	श्री चन्द्रिका सिंह	- 55
22.	हिन्दी पखवाड़ा, 2003	रिपोर्ट	हिन्दी कक्ष	- 57

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ रचनाकारों के निजी विचार हैं। रचनाओं की मौलिकता के लिए रचनाकार स्वयं जिम्मेवार हैं। रचनाओं में व्यक्त विचारों से महालेखाकार कार्यालय का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

-----प्रधान सम्पादक

चेतना



सत्यमेव जयते

महालेखाकार (ले. एवं ह०), बिहार, पटना का
संदेश

सुभाष चन्द्र बोस ने कहा था कि जात-पात की संकीर्णता और ईर्ष्या-द्वेष मिटाने में तथा भाषायी सीमा तोड़कर एक दिल को दूसरे दिल के साथ जोड़ने में जो मदद हिन्दी के प्रचार-प्रसार से मिल सकती है वह किसी दूसरे उद्यम या वस्तु से मिलना संभव नहीं है।

हिन्दी हमारी मातृभाषा, राज्यभाषा, राजभाषा और राष्ट्रभाषा है। इसके पीछे युग और इतिहास ही नहीं, भारतीय जनता की विराट शक्ति भी है। भारत सरकार की यह सुविचारित नीति है कि संघ की राजभाषा के रूप में हिन्दी तथा राज्यों के सरकारी कामकाज के लिए अन्य भारतीय भाषाओं के प्रयोग में उत्तरोत्तर वृद्धि हो। वास्तव में इनका विकास और समृद्धि एक दूसरे पर निर्भर है। राजभाषा विभाग हिन्दी को संघ की राजभाषा के रूप में उसकी प्रयोग-वृद्धि के क्षेत्र में कार्यरत है। अतः हमारा भी परम कर्तव्य है कि इस पुनीत कार्य में पूर्ण सहयोग करें। इन्हीं उद्देश्यों से अनुप्रेरित होकर हमारे कार्यालय से हिन्दी पत्रिका 'चेतना' का प्रकाशन होता रहा है।

मुझे यह कहते हुए बेहद खुशी हो रही है कि पत्रिका का सोलहवाँ अंक हमारे सहृदय एवं सुधी पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया जा रहा है जिसे पढ़कर वे सृजनात्मक मेधा का भरपूर आनन्द लेंगे। साथ ही मैं उन समस्त रचनाकारों एवं पत्रिका के सम्पादक तथा परामर्शदातृ समिति के सदस्यों को भी साधुवाद देता हूँ जिन्होंने अपने अथक प्रयास से पत्रिका को रुचिकर एवं ज्ञानवर्धक बनाया है।

अन्त में मेरी यही मंगलकामना है कि इस कार्यालय में हिन्दी की यह सृजन-चेतना सतत् अपनी रश्मि बिखेरती रहे!

राकेश कुमार वर्मा

महालेखाकार (ले० एवं ह०), बिहार,

पटना - 1



उपमहालेखाकार (प्रशासन एवं पेंशन), बिहार, पटना का संदेश

अत्यन्त प्रसन्नता की बात है कि कार्यालय में हिन्दी के प्रयोग को प्रोत्साहन देने के लिए त्रैमासिक हिन्दी पत्रिका 'चेतना' का सोलहवाँ अंक शीघ्र ही प्रकाशित होने जा रहा है। आशा करता हूँ कि यह पत्रिका हमारे सहृदय पाठकों को ज्ञानवर्धक एवं रूचिकर लगेगी तथा सरकारी कामकाज में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने में भी मददगार साबित होगी।

पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं सम्पादक को धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ तथा पत्रिका की अविरल प्रगति की मंगल कामना करता हूँ।

यू. एस. प्रसाद

उपमहालेखाकार (प्रशासन/पेंशन)

बिहार, पटना - 1



उपमहालेखाकार (जी.ई. एवं निधि), बिहार, पटना का संदेश

मुझे इस बात की खुशी है कि त्रैमासिक हिन्दी पत्रिका 'चेतना' का सोलहवाँ अंक अविलम्ब प्रकाशित होने जा रहा है। आशा है, पत्रिका का यह अंक सुधी एवं प्रेमी पाठकों को सुरूचिपूर्ण लगेगा।

अच्छी रचनाओं के लिए समस्त रचनाकारों को एवं सम्पादक को उनके सार्थक प्रयास के लिए हार्दिक धन्यवाद देता हूँ। पत्रिका के सम्यक विकास की हार्दिक शुभकामनाएँ!

ए. के. श्रीवास्तव

उपमहालेखाकार (जी.ई. एवं निधि)

बिहार, पटना - 1

इस कार्यालय की त्रैमासिक हिन्दी पत्रिका 'चेतना' के सोलहवें अंक को सुधी एवं सहृदय पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अतीव प्रसन्नता हो रही है। पत्रिका की रचनाएँ इस कार्यालय के राजभाषा-उद्यान के हरे-भरे पौधे हैं। इनमें कितनी हरियाली एवं सुगन्ध आ सकी है इसका निर्णय पाठकगण ही कर सकते हैं।

हिन्दी प्रारम्भ से ही समन्वय, एकता और प्रेम की भाषा रही है। कबीर, नानक और जायसी, सूर, तुलसी और रहीम, मीरा, रसखान और घनानन्द— इन सब महान कवियों का उद्देश्य था जन-जीवन को अध्यात्म के सूत्र से पिरोना। इन सबने अधिकांश हिन्दी का ही प्रयोग किया क्योंकि उस समय भी यह भारत के बहुत बड़े भू-भाग की भाषा थी। अतः हिन्दी में सर्वेक्य और समन्वय की धारा निरन्तर बहती आयी और जब कभी संकट आया, जहाँ कहीं इसका तिरोभाव हुआ वहीं यह पुनः एक नये वेग से प्रस्फुटित हुई और प्रेम तथा समन्वय के पथ पर आगे बढ़ती गई।

आज हिन्दी राष्ट्रीय ही नहीं अन्तर्राष्ट्रीय महत्त्व की भाषा भी बन चुकी है। विविध देशों में आयोजित विश्व हिन्दी सम्मेलन इसके अन्तर्राष्ट्रीय महत्त्व को दर्शाता है। हिन्दी की प्रमुख समस्याओं पर ठोस और व्यावहारिक सुझाव प्राप्त होते रहे और उनका सृदृढ़ संकल्प के साथ कार्यान्वयन होता रहा तो निश्चितरूपेण हिन्दी विश्व की भाषा होगी। संभावनाओं के द्वार खुल रहे हैं। भारत सरकार प्रयत्नशील है कि संयुक्त राष्ट्र संघ में हिन्दी को यथोचित स्थान प्राप्त हो सके। हम आशान्वित हैं कि हिन्दी अन्तर्राष्ट्रीय जगत में भी अपना एक सुनिश्चित स्थान बना सकेगी।

अंत में हिन्दी के प्रेमी एवं पत्रिका के संरक्षक माननीय महालेखाकार श्री राकेश कुमार वर्मा जी के प्रति विशेष रूप से आभार व्यक्त करता हूँ जिनका अपार स्नेह इस पत्रिका को मिलता आ रहा है। परामर्शदातृ समिति के सदस्यों के प्रति भी मैं अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ जिनके अमूल्य मार्गदर्शन से पत्रिका के प्रकाशन में सहायता मिली है। पत्रिका के सफल प्रकाशन एवं रूप-सज्जा में पूरा सहयोग प्रदान करने के लिए श्री अजित कुमार सिन्हा, सहायक लेखा अधिकारी, जी. डी. अनुभाग को साधुवाद देता हूँ।

अच्छी रचनाओं के लिए रचनाकारों को विपुल धन्यवाद देता हूँ और अनुरोध करता हूँ कि वे पत्रिका के अगले अंकों के लिए सतत समय पर अपनी रचनाएँ देते रहें क्योंकि बगैर उनके सहयोग के पत्रिका का ससमय प्रकाशन संभव नहीं हो पायेगा। साथ ही सहृदय पाठकों से भी अनुरोध है कि वे पत्रिका के प्रति अपने बहुमूल्य सुझाव भेजकर हमें अनुगृहीत करें।

जय हिन्द, जय हिन्दी!

आपके पत्र

आपके द्वारा प्रेषित हिन्दी पत्रिका 'चेतना' का पन्द्रहवाँ अंक प्राप्त हुआ। पत्रिका की साज-सज्जा आकर्षक और मनमोहक है। पत्रिका में जिन लेखों, कहानियों व कविताओं को सम्मिलित किया गया है वे वस्तुतः प्रभावोत्पादक और ज्ञानवर्धक हैं, जिनसे पाठकवर्ग अवश्य लाभान्वित होगा। पत्रिका के प्रकाशन में संपादक मंडल ने अवश्य ही लगन व कड़ी मेहनत से कार्य किया है जिसके लिए वे साधुवाद के पात्र हैं।

आशा है, ऐसे ही प्रयास जारी रखेंगे।

जबलपुर, मध्य प्रदेश
4-3-2003

उप निदेशक (मध्य)
हिन्दी शिक्षण योजना,
जबलपुर, मध्य प्रदेश

आपके कार्यालय की हिन्दी पत्रिका 'चेतना' के 15 वें अंक की प्राप्ति हुई। निबन्ध 'चकाचक पटना' और कविता 'ताजमहल और हमारा देश' बहुत ही रोचक तथा ज्ञानवर्धक लगे।

पत्रिका के उत्तरोत्तर उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएँ!

शिमला
12-3-2003

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी,
महालेखाकार (ले० प०),
हिमाचल प्रदेश, शिमला का कार्यालय

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी पत्रिका 'चेतना' के 15 वें अंक की एक प्रति प्राप्त हुई। एतदर्थ धन्यवाद।

उच्चस्तरीय निबंध, अच्छी कविताओं और व्यंग्य के लिए रचनाकार बधाई के पात्र हैं।

सम्पादक मंडल को धन्यवाद और पत्रिका राजभाषा के प्रचार-प्रसार में अग्रसर हो, इसके लिए शुभकामना।

कोलकाता
12-3-2003

स० ले० अधि० (हिन्दी सेल)
प्रधान महालेखाकार (ले० एवं ह०),
पश्चिम बंगाल का कार्यालय

राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार हेतु आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित 'चेतना' पत्रिका के 15 वें अंक की प्राप्ति पर अति प्रसन्नता हुई। पत्रिका में छपे सभी लेख एवं कविताएँ अति उत्तम एवं सारगर्भित हैं तथा पाठकों के मन पर अपनी अमिट छाप छोड़ते हैं।

सम्पादक मंडल को बधाई देता हूँ तथा पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति की कामना करता हूँ।

नई दिल्ली
17-3-2003

व० लेखापरीक्षा अधिकारी (राजभाषा),
महानिदेशक लेखापरीक्षा, केन्द्रीय राजस्व,
नई दिल्ली का कार्यालय

राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार हेतु आपके कार्यालय की त्रैमासिक हिन्दी पत्रिका 'चेतना' का पन्द्रहवाँ अंक प्राप्त हुआ, धन्यवाद।

इस अंक में प्रकाशित रचना सामग्री सुपाठ्य एवं सर्वग्राह्य है। विशेष रूप से श्री ललन प्रसाद श्रीवास्तव द्वारा लिखित 'जन्म कुण्डली और शनि की साढ़ेसाती', हरeram प्रधान द्वारा लिखित 'ब्रह्मपुर धाम', श्री राजकुमार सिंह द्वारा लिखित 'वेदों से' इत्यादि लेख रोचक एवं ज्ञानवर्धक हैं। अध्यात्म पर आधारित श्री दिलीप कुमार सिंह द्वारा लिखित 'उपासना से ईश्वर की प्राप्ति', बहुत ही पठनीय है।

पत्रिका की निरन्तर प्रगति के लिए शुभकामनाएँ!

महाराष्ट्र
25-3-2003

व० लेखा अधिकारी (राजभाषा),
महालोखाकार (ले० एवं ह०),
महाराष्ट्र का कार्यालय



आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी पत्रिका 'चेतना' का 15 वाँ अंक प्राप्त हुआ। इस अंक में संकलित सभी रचनाएँ स्तरीय एवं सुरुचिपूर्ण हैं। श्री रघुनाथ प्रसाद का आलेख 'चकाचक पटना' सबों को सोचने के लिए बाध्य करता है। श्री राजकुमार सिंह का लेख 'वेदों से' हमें अपनी विराट सांस्कृतिक परम्परा एवं विरासत से परिचित करवाता है।

कविताओं में श्री चन्द्रिका सिंह, सुश्री अदिति एवं श्री नरेन्द्र कुमार सिंह 'नाहर' की काव्य-रचनाएँ अत्यन्त प्रभावित करती हैं।

पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति की शुभकामनाएँ!

चण्डीगढ़
26-3-2003

प्रवर लेखा अधिकारी,
महालेखाकार (ले० एवं ह०) पंजाब,
चण्डीगढ़ का कार्यालय

आपके कार्यालय से प्रकाशित त्रैमासिक हिन्दी पत्रिका 'चेतना' के पन्द्रहवें अंक के प्रति प्राप्त हुई, एतदर्थ धन्यवाद।

पत्रिका के मुख पृष्ठ पर चित्रित 'शहीद स्मारक' के चित्र ने बरबस ही कारगिल युद्ध में शहीद हुए वीरों का स्मरण करा दिया है जिससे आँखें नम हो गईं। इसके अतिरिक्त पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ उत्तम एवं पठनीय हैं तथापि श्री रघुनाथ प्रसाद जी का लेख 'चकाचक पटना', श्री नरेन्द्र सिंह 'नाहर' की कविता 'उल्लू को खा गया खटास' तथा श्री दिलीप कुमार सिंह का लेख 'उपासना से ईश्वर की प्राप्ति विशेष रूप से उल्लेखनीय रचनाएँ हैं।

पत्रिका के सर्वांगीण विकास एवं निरन्तर प्रगति की शुभकामनाएँ।

ग्वालियर

27-3-2003

प्रधान संपादक "दर्पण" एवं

सहायक लेखा अधिकारी (राजभाषा)

महालेखाकार (ले० एवं ह०) प्रथम,

मध्य प्रदेश का कार्यालय

आपके कार्यालय से प्रकाशित हिन्दी पत्रिका 'चेतना' का पन्द्रहवाँ अंक प्राप्त हुआ। इस हेतु बहुत-बहुत धन्यवाद।

राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में आपका योगदान प्रशंसनीय है। हम सम्पादक मंडल को धन्यवाद देते हैं और पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की शुभकामना करते हैं।

तिरुवनंतपुरम

28-3-2003

हिन्दी अधिकारी,

महालेखाकार (ले० एवं ह०)

का कार्यालय,

केरल, तिरुवनंतपुरम

आपके कार्यालय से प्रकाशित हिन्दी पत्रिका 'चेतना' के पन्द्रहवें अंक की एक प्रति प्राप्त हुई। एतदर्थ धन्यवाद।

पत्रिका में समाविष्ट 'चकाचक पटना', 'उल्लू को खा गया खटास', 'स्वप्न क्या है?', 'उपासना से ईश्वर की प्राप्ति', 'मानस में नारी चरित्र' तथा 'संध्या नमन' सराहनीय हैं। इसके साथ ही सभी रचनाएँ पठनीय, रोचक एवं ज्ञानवर्धक हैं। आपकी पत्रिका 'चेतना' हिन्दी की प्रगामी प्रगति के लिए मार्गदर्शक सिद्ध होगी।

पत्रिका एवं हिन्दी के उज्ज्वल भविष्य के लिए कार्यरत संपादक मंडल को हार्दिक शुभकामनाएँ!

चेन्नई

9-4-2003

हिन्दी अधिकारी

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) - 1,
तमिलनाडु एवं पांडिचेरी का कार्यालय

आपके द्वारा प्रेषित 'चेतना' पत्रिका की 5 प्रतियाँ इस कार्यालय को प्राप्त हुई। एतदर्थ हार्दिक धन्यवाद।

पत्रिका का मुख पृष्ठ उत्कृष्ट एवं आकर्षक है। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ न केवल पठनीय हैं अपितु संग्रहणीय भी हैं। श्री रघुनाथ प्रसाद का निबंध 'चकाचक पटना', श्री ललन प्रसाद श्रीवास्तव का निबंध 'जन्म कुण्डली और शनि की साढ़े साती' तथा श्री राजू कुमार सिंह का लेख 'वेदों से' विशेष रूप से सराहनीय हैं।

सभी रचनाकारों तथा सम्पादक मंडल को श्रेष्ठ प्रकाशन के लिए बधाई। पत्रिका की अविरल प्रगति की हार्दिक शुभकामना।

राँची

24-4-2003

लेखा अधिकारी, हिन्दी कक्ष

प्रधान महालेखाकार (ले० एवं ह०)

झारखंड, राँची का कार्यालय

ठीकर

श्री मनमीत कुमार, लेखा अधिकारी

शाम हो चुकी थी। सुरेन्द्र बाबू खाट पर लेटे हुए न जाने क्या चिन्तन कर रहे थे। कमरे में अन्धेरा छाने लगा था। बाहर बच्चों का शोर-गुल पूरे उफान पर था। कमरे की खिड़कियों को उन्होंने बंद कर रखा था। शायद मौत से पहले उन्होंने दुनिया से बिदाई ले ली थी। तभी बाहर एक हल्की आहट हुई। सुरेन्द्र बाबू अचानक बोल उठे। “कौन? सरला!”

बाहर से प्रत्युत्तर अप्राप्त था। सुरेन्द्र बाबू की आँखों में आंसू की मात्र एक पतली लकीर खींच गई। आंसू भी बहना वहीं चाहता है जहाँ पोछने के लिए या सहारा के लिए आँचल, दुपट्टा या कंधा हो, परन्तु ये सभी चीजें सुरेन्द्र बाबू से दूर हो गयी थीं।

सुरेन्द्र बाबू की जिंदगी बचपन से ही चरमरायी हुई थी। उनके होश संभलते ही माँ गुजर गई। पत्नी की मौत के बाद उनके पिता दोस्त और शराब के हो गये।

बहन थी नहीं। एक बड़े भाई थे। वे सांसारिक विचारधारा के थे। अर्थवाद तथा भौतिकवाद के पक्का समर्थक थे। सुरेन्द्र बाबू बचपन से ही जीवन के सार्थक दायित्व की बात करते थे। साहित्य की तरफ उनका पूरा झुकाव था। दोनों भाईयों में विचारधाराओं की टकराहट के कारण पटती नहीं थी। सुरेन्द्र बाबू जब कॉलेज में पहुँचे तो उनके पिताजी गुजर गये। बड़े भाई को एक छोटी-सी सरकारी नौकरी मिल गई। धीरे-धीरे उन्होंने सुरेन्द्र बाबू की सुध लेनी छोड़ दी। रही सही कसर विवाह के बाद बड़े भाई की पत्नी ने पूरी कर दी और सुरेन्द्र बाबू घर से बेघर हो गये।

फिर भी सुरेन्द्र बाबू ने हिम्मत नहीं हारी। वे अपनी पढ़ाई करने लगे। परन्तु उनका झुकाव साहित्य की ओर था। धीरे-धीरे उनकी पहचान एक अच्छे नाटककार तथा कवि के रूप में होने लगी। उनकी जिंदगी में एक लड़की ने

प्रवेश किया। सुरेन्द्र बाबू के विचार उसे बहुत अच्छे भाते थे। वे दोनों घंटों कभी साहित्य पर, कभी सामाजिक घटनाओं पर तो कभी व्यक्तिगत बातें किया करते थे। सुरेन्द्र बाबू को तो जैसे बहार आ गई थी। उनकी जिदंगी फिर से सजने-सँवरने लगी थी।

बात शादी तक पहुँच गई। परन्तु लड़की के घर वाले बेरोजगार सुरेन्द्र बाबू से शादी करने को कतई राजी नहीं थे।

सुरेन्द्र बाबू का साहित्य-प्रेम उन्हें रोजी-रोटी नहीं दिला पा रहा था। अंततः लड़की की शादी दूसरी जगह हो गई।

सुरेन्द्र बाबू शादी के दिन बहुत रोये। पता नहीं, उन्हें उस दिन अपनी माँ की बहुत याद आ रही थी। जिदंगी ने उनके साथ फिर दगा कर दिया था। समय गुजरता गया। वे शांत रहने लगे थे। साहित्य से वे दूर होते जा रहे थे। जिदंगी को चलाने के लिए उन्हें कुछ-न-कुछ करना ही था। उन्हें सरकारी विभाग में लिपिक की नौकरी मिल गई। इधर-उनके भैया-भाभी को सुरेन्द्र बाबू को नौकरी मिल जाने की खबर मिल गई। खबर मिलते ही वे दोनों सुरेन्द्र बाबू को वापस घर ले जाने के लिए उनके यहाँ आ धमके। संबंधों में अपनापन लाने के लिये धन का बड़ा महत्व होता है। संबंधों की परिभाषा

का निर्धारण करने हेतु सबसे बड़ा मापदण्ड अर्थ हो गया है। दुनिया की इतनी छोटी बात को सुरेन्द्र बाबू समझ नहीं पाये। उन्हें भाई की बुलाहट में खून की पुकार नजर आने लगी। खैर वे अपने भैया-भाभी के पास पहुँच गये।

भैया-भाभी ने खूब पैसे दहेज में लेकर सुरेन्द्र बाबू की शादी कर दी। लड़की का नाम था मंजुला। उसे सुरेन्द्र बाबू के साहित्य प्रेम से, उनके विचार आदि से कुछ लेना-देना नहीं था। उसे प्यार था तो केवल सुरेन्द्र बाबू के वेतन से। घर में खींचातानी शुरू हो गई। दोनों भाई फिर से अलग हो गये। सुरेन्द्र बाबू अपने ही घर के पराये सदस्य हो गये। कालक्रम में उन्हें एक लड़का तथा एक लड़की हुई। माँ-बेटे में अच्छी पटती थी। क्यों न हो, वह कुल का चिराग था। परन्तु लड़की को अपने पापा से बहुत प्यार था। नाम था उसका 'सरला'। नाम की तरह ही वह सरल एवं अबोध थी। पापा को कब खाना है, कब सोना है आदि का खूब ख्याल रखती थी। धीरे-धीरे समय गुजरता गया। सरला कॉलेज में आ गई। लड़के की नौकरी लग गई। सरला की शादी की बात होने लगी, परन्तु उसने शादी से साफ इन्कार कर दिया। क्योंकि, वह अपने पापा को छोड़ना नहीं चाहती थी। सुरेन्द्र बाबू एक दिन रिटायर्ड हो गये। उनकी पत्नी मंजुला बीमार रहने लगी। सुरेन्द्र

बाबू अपनी पत्नी की पूरी देख भाल किया करते थे। गिरते हुए शरीर ने मंजुला को पति-पत्नी के संबंधों का सही ज्ञान दिलाने लगा था। वह घंटों सुरेन्द्र के पास रोया करती थी। शायद उसके पश्चात्ताप के आंसू थे। परन्तु बहुत देर हो चुकी थी। नये संबंध पूरी तरह से पनपने के पहले ही मंजुला चल बसीं।

लगातार पड़ती ठोकड़ों से सुरेन्द्र बाबू बुरी तरह टूट चुके थे। उनकी दिमागी हालत खराब होती गई। सरला अपने पापा की खूब सेवा करती थी। वह अपने पापा के लिए घंटों रोया करती थी। परन्तु जिंदगी के तनाव ने उसे भी तोड़ना शुरू कर दिया था। वह ब्लड प्रेशर, हाइपर टेंशन आदि से ग्रसित होने लगी। परन्तु वह अपनी वेदना को अपने मन में रखा करती थी। उसका एक मात्र लक्ष्य था, पापा को खुश रखना।

बेटे ने लव मैरेज कर लिया था। उसे अपने पिता से कोई खास सरोकार

नहीं था। बहु ने भी उसका साथ दिया। सरला की लगातार सेवा ने अपना रंग दिखाना शुरू कर दिया। सुरेन्द्र बाबू तो धीरे-धीरे स्वस्थ हो गये। लेकिन इधर सरला की बीमारी बढ़ती चली गई। शरीर ने उसका साथ छोड़ना शुरू कर दिया था। उसकी इच्छा शक्ति पर उसकी बीमारी भारी पड़ रही थी। एक रात अचानक वह उठी तथा दौड़ते हुए अपने पापा के पास गई। पापा! पापा! शब्द सुनते ही सुरेन्द्र बाबू हड़बड़ा कर उठे। वह पापा के पास आ गई। सांस उसकी उखड़ने लगी थी। अंतिम बार उसने पापा कहा और सांस उसकी रूक गई। सुरेन्द्र बाबू पत्थर की मूरत की तरह शांत थे। सरला का सिर उनकी गोद में था।

सुरेन्द्र बाबू अपनी खाट से उठे। उन्होंने दरवाजा खोला। लोड शेडिंग चल रहा था। बाहर पूरा अंधकार था। फिर भी उनकी आँखें बाहर कुछ ढूँढ़ रही थी, शायद सरला को।

दूसरों के अनुभव से होशियारी सीखने की मनुष्य की इच्छा नहीं होती, उसको स्वतंत्र ठोकर चाहिए।

-विनोबा भावे



जागरण दिवस

श्री नरेन्द्र कुमार सिंह 'नाहर'

सतर्कता, अभिचेतना का अभियान
कोशिश बनाने की, हैवान को इंसान।
मानव-मस्तिष्क में भरने की समझदारी और ज्ञान,
इस निमित्त चला रहे हैं हम जागरण अभियान।
भ्रष्टाचार से प्रदूषित वातावरण
सदाचार का घोर हरण
लुटती, छिन्न-भिन्न होती अस्मिता
तड़पती, छटपटाती, सिसकती सुता
नरसंहार, बलात्कार, अपहरण
द्रौपदी के चीर की तरह
बढ़ता भ्रष्ट आचरण
हम मना रहे हैं दिवस जागरण।
भ्रष्टाचार का वृहत रूप आतंकवाद
नष्ट कर शांति औ' मानवतावाद
छीनकर हमसे कश्मीर
खून से लिखना चाहता तकदीर
ध्वस्त कर वर्ल्ड ट्रेड सेन्टर
फैलाकर आतंक निरन्तर
उड़ाकर विमान से पेन्टागन
बेचैन कर मानव मन
त्रस्त कर भारतीय संसद
पूरा करना चाहता नापाक मकसद



भड़काकर नफरत के शोले
 बरसाकर विधान-सभा पर बम के गोले
 जेहाद् के नाम पर
 फैला रहे आतंक पाकिस्तान और तालिबान
 हम चला रहे हैं जागरण अभियान।
 चतुर्दिक सिसकियाँ
 भ्रष्टाचार का आतंक
 बम बारूद, बन्दूक की गोलियाँ
 चलाते आतंकी निशंका।
 हिंसा में दहकता समस्त संसार
 भ्रष्ट आचरण की अग्नि में
 जलते-दहकते इंसान की राख से
 उठते धुएँ का गुबार
 चीखता-चिल्लाता इंसान
 अट्टहास करता हैवान।
 मानवता का करुण क्रन्दन
 भ्रष्टाचार का ओसामा, इब्राहिम, वीरप्पन
 छीनता इंसान का भोलापन
 हरे-भरे कानन में दानवता का नर्तन
 बाधित सुख-शांति, ईश भजन-कीर्तन
 भूखे पेट, सूखी आँखें, नंगा तन
 सीमा पर तड़प रहा प्यारा वतन
 हम मना रहे हैं दिवस जागरण।
 गीता के उद्घोष-

“यदा-यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत
 अभ्युत्थानम् धर्मस्य तदात्मानम् सृजाम्यहम्
 परित्राणाय साधूनाम् विनाशाय च दृष्टकृताम्
 धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामि युगे-युगे” का
 कर विजयघोष, हो दानवता का संहार



सदाचार से हो भ्रष्टचार का उद्धार
 शांति, प्रेम, करुणा से आपूरित हो संसार
 हम जागरूक हों, कर्मरत हों, मिटा दें कदाचार।
 हम जागरूक दिवस मनाएँ
 उठकर, जागकर, होकर कर्मरत
 बनायें नवजागरण का भारत
 करके मानवता का शंखनाद
 दफनाकर समस्त आतंकवाद
 अखिल विश्व में फैलाकर मानवतावाद।
 चतुर्दिक नव विहान हो
 जागरण अभियान हो
 मानवता का नव संधान हो
 विकास का नव सोपान हो
 बस सिर्फ इंसान हो
 और इंसानियत।
 न हो हैवानियत की हवस
 तभी सार्थक हो सकता है जागरण दिवस,
 तभी सार्थक हो सकता है जागरण दिवस।

जागरण का 'अर्थ' है कर्मक्षेत्र में अवतीर्ण होना और
 कर्मक्षेत्र क्या है? जीवन-संग्राम। -जयशंकर प्रसाद



यात्रा-वृत्तान्त

श्री शिवदयाल सिंह, स० ले० अधिकारी

एकबार एक रेलगाड़ी (राजधानी एक्सप्रेस) गया जंक्शन से पकड़नी थी। उस राजधानी एक्सप्रेस के पहुँचने का समय 03.59 बजे सुबह एवं राँची के लिए प्रस्थान करने का समय 04.00 बजे सुबह था। उस गाड़ी में मैंने अपनी सीट पटना जंक्शन से ही आरक्षित करा ली थी। उस समय गया पहुँचने के लिए मुझे लगभग 11.00 बजे रात में गंगा-दामोदर एक्सप्रेस पकड़नी थी। रात के लगभग 10.15 बजे होंगे। मैं पटना जंक्शन के पूछ-ताछ की खिड़की के सामने गाड़ियों के बारे में सूचनाओं को पढ़ने सुनने के लिए खड़ा था। अभी कुछ ही देर पहले मैं अपने एक सहकर्मी से विलग होकर अकेला गाड़ी की प्रतीक्षा में खड़ा था। मैं ऐसे स्थान पर खड़ा था जिससे आने-जाने वालों को किसी तरह की दिक्कत न हो। कुछ व्यक्ति वजन मशीन पर अपना वजन ले रहे थे। कुछ लोग फर्श पर बैठे थे। कुछ लोग

कार से उतरकर प्लेटफार्म की ओर बढ़ रहे थे तो कुछ लोग कार या रिक्शा से स्टेशन छोड़ रहे थे। सबसे अधिक भीड़ पूछ-ताछ की खिड़कियों पर थी। ऐसे माहौल में मेरे पास एक आदमी बड़बड़ाने लगा। वह प्रत्येक आदमी की ओर इशारा कर रहा था और प्रश्न अपने-आप कर रहा था कि क्या इसने बोला है? एक बार आवाज आई-नहीं। दूसरे व्यक्ति की भी बारी आई। पुनः आवाज आई नहीं। दूसरी बार की आवाज सुनते ही आँखें एक करीब सोलह वर्षीया गोरी बाला पर टिक गई। तीसरी बार आवाज 'हाँ' में आई थी। बड़बड़ाने वाले व्यक्ति ने जैसे ही 'हाँ' सुना उसने एक अधेड़ व्यक्ति जिसकी तरफ इशारा करने से 'हाँ' शब्द सुनने को मिले थे, पूछने लगा। हाँ जी, बताओ तुमने इसे क्या कहा या क्या किया? अधेड़ व्यक्ति जिसकी उम्र 50-55 के आस पास रही होगी, फूल पैन्ट, शर्ट एवं ऊपर से एक हल्का कोट भी पहने हुए था, छोटे-छोटे

संवारे हुए बाल, आँख पर आधुनिक चश्मा, देखने में सभ्य नागरिक की भांति दिख रहा था, ने कुछ नहीं कहा। पुनः जोर की आवाज में प्रश्न किया- हाँ, मैं तुमसे ही पूछ रहा हूँ। बता, तुमने इसे (बाला को) क्या किया? पुनः वह व्यक्ति चुप रहा। तीसरी बार बड़बड़ाने वाले व्यक्ति ने बाला की तरफ मुखातिब होते हुए कहा इसने क्या कहा जी? बाला ने सरल भाव से कहा-यह मुझसे छेड़खानी करता है। इतना सुनते ही बड़बड़ाने वाला व्यक्ति आगबबूला हो गया। उसने अधेड़ की कालर को झकझोरते हुए कहा- तुम्हें शर्म नहीं आती एक लड़की को छेड़ते हुए। चलो इधर मेरे साथ तब मैं तुम्हें बताता हूँ। उस बड़बड़ाने वाले व्यक्ति के साथ में दो बन्दूकधारी सिपाही थे। उनलोगों ने शीघ्र ही अधेड़ व्यक्ति को अपने कब्जे में ले लिया और उसे बहुत कुछ भला-बुरा कहा। यहाँ तक कि उनके हाथ से लगे गाल पर के वार से उसका चश्मा टूट गया। चश्मा का एक पैर नीचे गिर गया। वह व्यक्ति मार खाता रहा पर विरोध के कुछ भी शब्द नहीं कहे। क्या वह गूँगा था? यह प्रश्न अभी भी मेरे मन में गूँज रहा है। सिपाही उसे अन्यत्र लेकर चले गए। बाला भी उनके पीछे हो ली। पर बाला के पीछे कोई अन्य व्यक्ति

अभिभावक के रूप में नहीं था। क्या वह बाला भी सभ्य थी? उतनी रात गए छेड़खानी का आरोप अधेड़ पर लगाने के लिए ही क्या वह बिना अभिभावक के स्वच्छन्द विचरण करने चली थी? क्या आप कुछ बता सकते हैं?

यात्रा के इसी क्रम में मैं रांची से वापसी यात्रा पर था। आरक्षित डिब्बे का टिकट मैंने पहले से ही ले रखा था। मैं दिन की यात्रा रात की यात्रा के मुकाबले ज्यादा निरापाद समझता हूँ। शायद इसी विचारधारा के एक अन्य यात्री 50 नम्बर सीट पर आये। मेरा सीट नम्बर 51 था। मैं कम बोलने की कोशिश करता हूँ। वे भी कम बोलने के शिकार लग रहे थे। अगल-बगल रहते हुए छः घन्टे की गया तक की यात्रा के दौरान उन्होंने मुझसे कुछ नहीं कहा। मैंने भी उनसे कुछ नहीं बोला। मैंने अपना अखबार लिया उन्होंने अपना / वे चुपचाप ऊँघते रहे और मैं भी। उनके पास एक छोटा-सा मोबाइल फोन था जिस पर उन्होंने कोलकाता और पटना से बातें कीं। पर अभी भी उनका अधूरा परिचय ही जान सका था। मात्र इतना जान सका था कि इनका सम्बन्ध राँची, कोलकाता एवं पटना में है। वे पटना एक शादी में जा रहे थे। उन्हें लेने के लिए गाड़ी भी आ सकती थी। गाड़ी कबतक

पटना पहुँचेगी यह मैंने उन्हें बताया था। क्योंकि उन्होंने यह मुझसे जानना चाहा था। वेष-भूषा से ऐसा लग रहा था कि वे भी नौकरी पेशावाले ही हैं। गाड़ी गया से दो बजे दिन के आस-पास खुली। कुछ दूर आगे आने पर ए०सी० डिब्बा से बाहर पर गेट के अन्दर एक विशेष वेष-भूषा वाला आदमी दिखाई पड़ा। उसकी लम्बाई सबकी लम्बाई से ऊँची थी। वैसी उँचाई पुलिस वालों में होती है। बड़ी-बड़ी मूछें थी। सिर पर धोती की उजली पगड़ी थी। कुर्ता और धोती पर उजला कोट विराजमान था। कोट के ऊपर से आधा लिपटी हुई एक चादर थी। उसकी निगाहों से सामान्य आदमी को डर लग रहा था। महिलाएँ उसके तरफ वाले बाथरूम का उपयोग न कर उल्टी दिशा के बाथ-रूम में जाना ज्यादा पसन्द कर रही थीं। मैं तो यहाँ तक सोचने लगा था कि शायद दिन में ही तो यह ट्रेन-डकैती नहीं होगी। फिर भी संतोष था कि चलो वह तो डिब्बा के बाहरी हिस्से में खड़ा है। उसकी बातचीत पुलिस वालों से भी हो रही थी। वे उसे कुछ नहीं बोल रहे थे। लगता था पुलिस से उसकी सांठ-गांठ थी। वह बार-बार डिब्बा में झाँक रहा था। डर लग रहा था कि कहीं वह डिब्बा में घुसे नहीं। एकबार वह डिब्बा

के अन्दर घुस भी गया। उसकी बात सुनकर, उसकी चाल देखकर ऐसा लग रहा था कि पीने के चलते उसकी मानसिक हालत उतनी अच्छी नहीं थी। मैं ईश्वर से प्रार्थना कर रहा था कि वह मेरी सीट के बगल में न बैठे। संयोग से वह मेरे दो सीट पीछे बैठ गया। वह कुछ विद्यार्थियों के साथ क्रिकेट की गप्पें चलाने लगा। एक यात्री जो मेरी सीट के ठीक पीछे थे, बहुत बोल रहे थे। उन्हें वह अपने पास बुलाने लगा। इन्होंने उसके पास जाने की हिम्मत नहीं जुटा पायी। पुनः उसने उन्हें बुलाया। फिर भी वह नहीं गये। अब इनका बोलना बन्द हो गया। मैं डरा हुआ था कि वह मुझसे बात न करें। एकबार तो ऐसा हुआ कि वह मेरी सीट के पास बोलता हुआ आ पहुँचा। यह कहता हुआ वह आ रहा था कि क्या अखबार पढ़ते हैं? हमलोगों के जैसा नौजवान जो काम करते हैं वहीं अखबार में छपता है और दादा-बाबा उसको पढ़ते हैं। ये शब्द उसकी आपराधिक प्रवृत्ति के द्योतक थे। लगा कि मुझसे बोला। मैं उसकी बातें तो सुन रहा था पर उसकी ओर आंखें मिलाने की हिम्मत नहीं जुटा पा रहा था। एकाएक वह मेरे सटे सीट नं० 50 के बाबू से बोल उठा-‘सर, थोड़ा ध्यान दीजिए’। बाबू ने हामी भर दी। मैंने समझा अब वह इस बाबू

से कुछ पैसा जरूर वसूल करेगा। फिर वह अपनी छोड़ी हुई सीट पर वापस गया। मैं सोचने लगा अब क्या होगा? वह मुझसे भी हो सकता है वैसा मांग बैठे, ध्यान देने को कह डाले। थोड़ी देर बाद पुनः वह आ गया। बोला - 'सर, ध्यान दीजिए' बगलवाले बाबू को ही कहने लगा-कि वह निलंबित सिपाही है। उसका नाम कोई पाण्डेय (काल्पनिक नाम) है। उसके पिता एस०आई० थे। उन्होंने ही उसे नौकरी पकड़वा दी थी। राँची में अमुक मैडम एस० पी० रहती हैं। उनसे थोड़ा बोल दीजिए। मेरा कल्याण हो जाएगा। उसे बेटी की शादी

करनी है। साहब (बाबू) ने उसे मैडम एस०पी० से कह देने का आश्वासन दे दिया। पर आगे उसे स्वयं समझने को कहा। उन्होंने निलंबित सिपाही को 'आनन्द विहार', राँची अपने आवास का पता बताया। इतना होने पर वह बाबू का पैर स्पर्श करते हुए बोला-बस इतना काफी है। मैडम अमुक की पतोहू हैं। तब मैंने समझा कि वह बाबू पुलिस विभाग के कोई अधिकारी होंगे। तब मेरा डर दूर हुआ। वह सिपाही पटना गया के मध्य कहीं का रहने वाला था। वह पटना तक साथ ही गया। मैं तो सिगनल के पास गाड़ी रूकने पर उतर गया क्योंकि मेरा आवास सिगनल के स्थान से निकट था।

जल एक जगह ठहरे रहने से बदबूदार हो जाता है, दूज का चाँद यात्रा करते रहने से ही पूर्ण चन्द्रमा बन जाता है।

इब्ज-उल-वर्दी



ज्ञान मोक्षाप्रद वेद वखाना

श्री दिलीप कुमार सिंह, लिपिक

ॐ

श्री सद्गुरवे नमः

बन्दउ गुरूपद कंज, कृपा सिन्धु नर रूप हरि।
महामोहतम पुंज, जासु वचन रविकर निकर॥
मंगल मूरति सद गुरू, मिलवै सर्वाधार।
मंगल मय मंगल करण, विनवौ बारम्बार॥
धन्य-धन्य सद्गुरू सुखद, महिमा कही न जाय।
जो कछु कहूँ तुम्हरी कृपा, मो तो कछु न वसाय॥

एक राज दरबार में महावत ने एक हाथी को नहला धुला कर बाँध दिया। दरबार के बगल से जाते हुए एक सज्जन ने महावत से पूछा अभी-अभी आप हाथी को नहला धुलाकर लाये हैं, हाथी अपने शीश पर सुड़ से धूल ले रहा है। महावत ने उत्तर दिया यह तो जंगली जानवर है, इसको क्या पता नहलाना धुलाना क्या होता है? वह सज्जन भगवान श्री कृष्ण का भक्त एवं कवि था। उसने अब्दुल रहीम खान खाना से कविता में पूछा-

“धूल धरत नीज शीश पै कहो रहीम केहीं काज”?

उत्तर में अब्दुल रहीम खान खाना ने कहा-

“जो रज मुनि पत्नी तरी सो खोजत गज राज”।

हाथी अपने शीश पर धूल नहीं ले रहा है वह तो उस धूल की खोज में है, जिस धूल से मुनि पत्नी अहिल्या का भगवान श्री राम ने उद्धार किया था। इसी बात को किसी भक्त ने संत कबीर साहब से पूछा नहलाया धुलाया हुआ हाथी अपने शीश पर धूल क्यों लेता है?

संत कबीर साहब उत्तर देते हैं:-

“राज दुआरे बाँधिया माथा धुनै गजन्द, मनुष्य जन्म कब पायहौ भजिहौ परमानन्द”।

नहलाया धुलाया हुआ हाथी अपने शीश पर धूल नहीं ले रहा है, वह तो अपना शीश धुन रहा है कि कब मनुष्य का शरीर हमको प्राप्त हो कि हम परमात्मा का भजन करके अपने आवागमन के चक्र से सदा के लिए स्वयं को छुड़ा सकें।

हम लोगों को मनुष्य का शरीर प्राप्त है कहीं हम मृत्यु के उपरान्त हाथी के शरीर में न चले जायें, इसलिये यह निश्चित कर लेना चाहिए कि मनुष्य शरीर छूटने के बाद बारम्बार मनुष्य का ही शरीर प्राप्त होता रहे जबतक कि हमको मोक्ष प्राप्त नहीं हो जाये अर्थात् सदा के लिए आवागमन के चक्र से छुटकारा नहीं मिल जाये।

यह कब और कैसे प्राप्त होगा :-

संतकबीर साहब की वाणी :-

1. "भक्ति बीज बिनसे नहीं जो युग जाये अनन्त,
ऊँच नीच घर जन्म ले तेउ संत के संत"॥
2. "भक्ति बीज पलटे नहीं आए पड़े जो चोल,
कंचन जो विष्ठा पड़े घटे न ताको मोल"॥

1. संत सदगुरु द्वारा प्रदान किया हुआ आत्मज्ञान को संत कबीर साहेब ने भक्ति का बीज कहा है जिसका अनन्त युगों तक नाश नहीं होता है। वैसे भक्त जिस युग में, जिस कुल में जन्म लेते हैं वे संत कहलाते हैं। जैसे, उच्च कुल में संत तुलसीदास जी, संत गुरुनानक देव जी आदि संत का अवतार हुआ है, नीच कुल में रविदास जी, सोपच भगत (डोम) आदि संत का अवतार हुआ है।
2. संत सदगुरु द्वारा प्रदान किया हुआ आत्मज्ञान को संत कबीर साहब ने सोना की उपमा देकर मनुष्यों को समझाया है कि जैसे सोना विष्ठा में पड़ा हुआ है, उस सोने को जल से साफ करके जौहरी की दुकान पर बेचने के लिए ले जाते हैं, तो जौहरी यह नहीं देखता है कि सोना विष्ठा से उठाकर लाया गया है अथवा तिजौरी से। जौहरी सोना देखता है और यह सोना की कीमत आँकता है।
इस तरह परमप्रभु परमात्मा यह नहीं देखते हैं कि वह भक्त उच्च कुल से आया है वा नीच कुल से। परम प्रभु परमात्मा भक्त के अन्दर में भक्ति रूपी सोना को देखते हैं, साधना त्रयताप (दैहिक, दैविक एवं भौतिक) के कारणों से पूरी नहीं हो सकने की

स्थिति में ऐसे भक्त को बारम्बार मनुष्य का शरीर प्रदान करते हैं। यह मनुष्य शरीर तब तक प्रदान करते रहते हैं जब तक कि भक्ति पूरी न हो जाय और वह भक्त परम प्रभु परमात्मा को प्राप्त करके सदा के लिए आवागमन के चक्र से छूट नहीं जाता है।

आत्मज्ञान प्राप्त करने के लिए भगवान श्री कृष्ण वाणी:-

“तदिद्धि प्रणि पातेन परिप्रश्नेन सेवया।

उपदेक्ष्यन्ति ते ज्ञानं ज्ञानिनस्तत्त्व दर्शिनः”।

अर्थ - तत्त्व ज्ञान जानने वाले ज्ञानी महापुरुषों से भली प्रकार दण्डवत प्रणाम कर तथा सेवा और निष्कपट भाव से किये प्रश्न द्वारा उस ज्ञान को जान व मर्म को जानने वाले ज्ञानीजन तुझे उस ज्ञान का उपदेश करेंगे”।

वेद में आत्मज्ञान प्राप्त करने का उपदेश नचिकेता यमराज संवाद:- (कठोपनिषद्)

नचिकेता पाँच वर्ष का छोटा सा बालक था, नचिकेता के पिता ने यज्ञ किया था, जिसमें धन, वस्त्र, गायें दान कर रहा था। उस यज्ञ में ऐसी भी गायें दान में दी जा रही थीं, जो कि अन्तिम घास खा चुकी थी एवं अन्तिम पानी पी चुकी थी। नचिकेता से यह सब देखा नहीं गया और उसने अपने पिता से कहा, पिताजी आप सब कुछ दान कर रहे हैं, सब कुछ में मैं भी आपका पुत्र हूँ, आप मुझे किसको दान करते हैं। नचिकेता के पिता ने कुछ भी जबाब नहीं दिया। फिर दूसरी बार नचिकेता ने कहा पिता जी मुझे किसको दान करते हैं। नचिकेता के पिताजी चुप रहे। तीसरी बार नचिकेता ने पिताजी से पूछा पिताजी मुझे किसको दान करते हैं। तीसरी बार नचिकेता के पिता ने गुस्सा कर कहा जाओ तुमको यमराज को दान करता हूँ। तू यमराज के पास चला जा। नचिकेता यमराज के घर पर चले गये। यमराज घर पर नहीं थे। तीन दिनों बाद यमराज घर आये तो देखा, मेरे घर अतिथि आये हुए हैं, मैंने उसका कोई आदर सत्कार नहीं किया है। वह तीन दिनों तक भूखा रहे यह तो बहुत बड़ा पाप मुझसे हो गया है। यमराज ने नचिकेता से कहा तुम तीन दिनों से मेरे घर पर आये हो कुछ खाये पीये नहीं हो, पहले तुम कुछ खा पी लो और इसके बदले में तुम मुझसे तीन वरदान ले लो।

नचिकेता ने यमराज से कहा आप वरदान ही देना चाहते हैं तो पहला वरदान यह दीजिए कि मैं जब अपने पिता के पास जाऊँ तो पिताजी पुत्रवत् मुझसे प्यार करें। दूसरा यह

दीजिए कि मेरे पिताजी का गुस्सा शांत हो जाये, और तीसरा वरदान दीजिए कि "को मैं कित आया, कित जाना, क्या सार, को मम जननी, को पिता या तो कहिये विचार"। मैं कौन हूँ, मैं कहाँ से आया हूँ मुझे शरीर छोड़ कर कहाँ जाना है, सार ज्ञान क्या है, मेरी माता कौन, मेरे पिता कौन, यह मुझे समझा कर कहिए।

संसार में लोग आते हैं, मर के कहाँ चले जाते हैं? मैं मरूँ नहीं, मुझे अमरत्व का लाभ प्राप्त हो, यह वरदान मुझे दीजिए। यमराज ने कहा अमरत्व की बात नहीं पूछो, तुम संसार का जो सुख लेना चाहो वह मैं तुम्हें दे सकता हूँ। जितनी गायें लेना चाहो वह ले लो, जितने घोड़े लेना चाहो ले लो, जितने रथ लेना चाहो ले लो, जितनी अप्सरायें लेना चाहो ले लो, तुम जितनी आयु लेना चाहो ले लो, लेकिन अमरत्व की बात मत पूछो। नचिकेता ने कहा आप कहते हैं जितनी गायें लेना चाहो ले लो, जितने घोड़े, जितने रथ, जितनी अप्सरायें, जितनी आयु लेना चाहो ले लो, आप जितनी आयु कहकर सीमा में बाँध दे रहे हैं। क्या भोग-विलास-ऐश्वर्य से अमरत्व प्राप्त हो सकता है, अगर नहीं तो मुझे ऐश्वर्य भोग विलास नहीं चाहिए। आप मुझे अमरत्व का वरदान दीजिए।

नचिकेता प्रलोभन में नहीं फँसता है। यमराज ने नचिकेता को आत्मज्ञान प्रदान किया।

“धर्म कथा बाहर सतसंगा। अन्तर सत्संग ध्यान अभंगा॥ (महर्षि मेहें पदावली)

“धर्म ते विरति योग ते ज्ञाना। ज्ञान मोझ प्रद वेद वखाना॥ (गो० तुलसी दास)

धारयति मर्मः सह धर्मः-

मर्म क्या है जिसको हम धारण किये हुए हैं:-

मर्म है अपने को जानना। मैं कौन हूँ? जिस किसी व्यक्ति में अपने आप को जान लेने की उत्कण्ठा उत्पन्न होती है, तो सबसे पहले उस व्यक्ति के अन्दर में बैराग उत्पन्न हो जाता है। बैराग से लीग समझते हैं कि घर बार, परिवार, रोजगार छोड़कर साधु का वेश लेकर जंगल चला जाना, ऐसा सोचने वालो को संत कबीर साहब कहते हैं:-

अवधु भूले को घर लावे, सो जन हम को भावे॥ टेक॥

घर में जोग भोग घरहीं में, घर तजि वन नहीं जावै।

वन के गये कल्पना उपजै, तब घौ कहाँ सझवै॥॥॥

घर में जुक्ति मुक्ति घरहीं में, जो गुरु अलख लखावै।

सहज सुन्न में रहे समाना, सहज समाधि लगावै॥२॥
 उनमुनी रहैं ब्रह्म को चीन्हें, परम तत्व को ध्यावै।
 सुरत निरत सो मेला करिके, अनहद नाद बजावै॥३॥
 घर में बस्तु बस्तु भी घर हैं, घर ही बस्तु मिलावै।
 कहै कबीर सुनों हो अवधु, ज्यों का त्यों ठहरावै॥४॥
 बैराग का अर्थ है, जो पाप करेंगे, किसी में नहीं बढ़ेंगे।

पाप क्या है :-

झूठ, चोरी, नशा, हिंसा और व्यभिचार।

जो इन पाँच पापों को छोड़ के रहते हैं, उनका संसार भी बनता है, परलोक भी। जहाँ इनके साथी अधिक होते हैं, वहाँ शान्ति रहती है। राज्य में, देश में भी शान्ति रहती है। ईश्वर भक्ति में पापों का त्याग अत्यन्त आवश्यक होता है। पाप की कमाई के धन से बचना चाहिए। किन्तु परिश्रम से धन कमा के खाने की आवश्यकता लोग नहीं जानते हैं और ऐसा करते भी नहीं हैं। धार्मिक भावना में एकरूपता-
 वैदिक धर्म में मंदिर, ईसाई धर्म में गिरिजाघर,
 इस्लाम धर्म में मस्जिद और सिख धर्म में गुरुद्वारा।
 परम प्रभु परमात्मा की प्राप्ति अपने अन्दर होगी। इसलिए इसकी प्राप्ति का मार्ग अपने अन्दर है। सभी संतो ने एक स्वर से यह बात कही है।
 रास्ता का आरंभ आज्ञाचक्र, सुषुम्ना, शहरग से होता है।

एक कामिल फकीर का कलाम है:-

“क्यों भटकता फिर रहा तू ऐ तलाशे यार में।

रास्ता शहरग में हैं दिलवर पै जाने के लिये”॥

(संत तुलसी साहब, हाथरस)

“बेहोशिये इन्सान से यह ख्याल जुदा है। जाहिर में हैं मुहम्मद बातिन में खुदा है”॥

“उलटि पाछिलो पैड़ो पकड़ो, पसरा मना बटोर” **(संत कबीर साहब)**

कहे कबीर सुनो भाई साधो, तब पैहो निज ठौर

“उलटि देखो घट में ज्योति पसार” **(संत गुलाब साहब)**

नयन नासिका अग्र हैं, तहाँ ब्रह्म वास।

“अविनासी विनसै नहीं, हो सहज ज्योति प्रकाश”। (संत सूरदास)

“अन्तर जोति भई गुरु साखी चीने नाम करंमा।

नानक हउमै मारि पतीने तारा चड़िया लंमा”॥ (संत गुरु नानकदेव)

“मन ही सन्मुख नूर है, मन ही सन्मुख तेज।

मन ही सन्मुख ज्योति है, मन ही सन्मुख सेज”॥ (संत दादु दयाल)

“जब लगि नहि निज हृदि प्रकाश अरू विषय आश मन माही।

तुलसीदास तब लग जग योनि भ्रमत सपनेहु सुख नाही”। (संत गो० तुलसीदास)

कबीर कमल प्रकासिया, ऊगा निर्मल सूर।

रैन अंधेरी मिटि गई, बाजे अनहद तूर” ॥ (संत कबीर साहब)

“विन्दुनाह महालिङ्ग विष्णुलक्ष्मी निकेतनम्”।

देहं विष्णुवालयं प्रोक्तं सिद्धिदं सर्वदेहिनाम्”। (नादविन्दु पणिषद)

“सुखमन के झिना नाल से अमृत की धारा बहि रही।

मीन सूरत धार धर भाठा से सीरा चढ़ि रही”॥ (महर्षि मेंहीं पदावली)

“खोज करो अन्तर उजयाली दृष्टि वान कोई देखा है।

गुरु भेदी का चरण सेवकर भेद भक्त पा लेता है। (महर्षि मेंहीं पदावली)

संत सदगुरु महर्षि मेंहीं परमहंस जी महाराज निज तन में परम प्रभु परमात्मा को खोजने को कहते हैं:-

निज तन में खोज सज्जन, बाहर न खोजना।

अपने ही घर में हरि है, अपने में खोजना ॥1॥

दोउ नैन नजर जोड़ि के, एक नोक बनाके।

अन्तर में देख सुन- सुन, अन्तर में खोजना॥2॥

तिल द्वार तक सीधे, सुरत को खैच ला।

अनहद धुनों को सुन-सुन, चढ़-चढ़ के खोजना॥3॥

बजती हैं पाँच नौबतें, सुनि एक एक को।

प्रति एक पे चढ़ि जा के, निज नाह खोजना॥4॥

पंचम बजे धुर घर से, जहाँ आप बिराजे।

गुरु की कृपा से मेंहीं, तहाँ पहुँची खोजना॥5॥

महर्षि मँहीं परमहंस जी महाराज एवं अन्य सारे संतों ने अपनी दोनों आखों की धाराओं को जोड़ कर एक बनाने को कहा है जिसे अपने अन्दर में एक बिन्दुता प्राप्त होती है, प्रकाश का उदय होता है। जब प्रकाश का उदय होता है तो उसमें कम्प भी होता है। अग्नि जलती है, उसमें प्रकाश होता है साथ ही कम्प भी होता है। कम्प जिसको सहचर शब्द कहते हैं। इस कम्पमय शब्द को हम स्थूल कर्ण से नहीं सुन सकते हैं। जब हमारा दशम द्वार, तिल द्वार, शहरग, सुषुम्ना खुल जाता है, तब हम अपने ही अन्दर सूक्ष्म कर्ण से इस कम्पमय शब्द को सुन सकते हैं। नीचे का शब्द अपने से ऊपर के शब्द को पकड़ता हुआ एक से दूसरे, दूसरे से तीसरा, तीसरे से चौथा, चौथे से पंचम शब्द जिसको कैवल्य कहते हैं।

पहला स्थूल मण्डल का केन्द्रीय शब्द, दूसरा सूक्ष्म मण्डल का केन्द्रीय शब्द, तीसरा कारण मण्डल का केन्द्रीय शब्द, चौथा महाकारण मण्डल का केन्द्रीय शब्द, पाँचवा कैवल्य मण्डल का केन्द्रीय शब्द। इस तरह से हमारे स्थूल शरीर के अन्दर और जड़ तीन शरीर एवं पाँचवा कैवल्य शरीर है जिसको हम आत्मा कहते हैं।

“ईश्वर अंश जीव अविनाशी चेतन अमल सुख राखी”। (संत गो० तुलसीदास रामचरित्र मानस)

पाँच शरीर के संबंध में अब हम इस प्रकार से विचार कर सकते हैं।

जैसे गंदे पानी को स्वच्छ पीने योग्य बनाने के लिए फिल्टर की बनावट को हम देखें। पाँच घड़े हम लेते हैं। चार घड़े के निचले भाग में एक छोटा सा छेद कर देते हैं। चार घड़ों के छिद्र में कपड़े के एक-एक पलीता या धागा को समा देते हैं। अब हम पहले घड़े में कोयला, दूसरे घड़े में चूना, तीसरे घड़े में महीन बालू, चौथे घड़े में कंकड़ एवं पाँचवे घड़ा को, खाली रखते हैं। पाँचवे घड़ा को, जो खाली है सबसे नीचे रखते हैं उसके ऊपर चौथा घड़ा कंकड़ वाला रखते हैं, उसके ऊपर तीसरा घड़ा बालू वाला रखते हैं, उसके ऊपर दूसरा घड़ा चूना वाला रखते हैं, सबसे ऊपर प्रथम घड़ा कोयले वाला रखते हैं। अब हम गंदे पानी को ऊपर वाला घड़ा जिसमें कोयला है उसमें डालते हैं। कोयले वाले घड़ा से पानी छनकर धागे के सहारे बून्द-बून्द चूकर दूसरा घड़ा चूना वाला में आता है। चूना वाला घड़ा से धागे के सहारे पानी छनकर बून्द-बून्द चूकर बालू वाला घड़ा में आता है।

बालू वाला घड़ा से धागे के सहारे पानी छनकर बून्द-बून्द चूकर कंकड़ वाला घड़ा में आता है, कंकड़वाला घड़ा से धागे के सहारे पानी छनकर बून्द-बून्द चूकर पाँचवा घड़ा जो खाली है में आकर जमा हो जाता है। इस तरह हम गंदे पानी को पीने योग्य स्वच्छ बना लेते हैं। इसी तरह से सूरत का डोर (चेतनधार) पकड़कर पहले अंधकार में मानस जाप एवं मानस ध्यान के द्वारा दृष्टियोग करने की क्षमता प्राप्त करने से प्रकाश में जाते हैं, फिर प्रकाश से शब्द में जाते हैं शब्द में पहले अनहद शब्द जिसको आहत नाद कहा जाता है। घर्षण से जो शब्द होता है उसे आहत शब्द कहते हैं। यह आहत शब्द सूक्ष्म, कारण, महाकारण, मण्डल तक होता है। अनहद शब्द जिसकी हद नहीं हो, सीमा नहीं हो, उसे अनहद कहते हैं। जैसे बालूका राशि का गिनना असंभव है फिर अनहद आहत से अनाहत शब्द में जाते हैं जैसे बड़ा-बड़ा कंकड़ गिनने योग्य है। उसी तरह आहत शब्द में संत सद्गुरु द्वारा शब्द की पहचान करायी जाती है उस शब्द को पकड़कर अनाहत शब्द सार शब्द को पकड़ते हैं जो एक ही एक हो यह अनाहत शब्द परमात्मा से उत्थित नाद है। इसी एक शब्द को कैवल्य, परम पद आत्मा कहा जाता है। यहीं से परमात्मा का साक्षात्कार साधु करके संत कहलाते हैं। इसी कैवल्य को रामनाम, शिवनाम, विष्णुनाम, कृष्णनाम, आदिनाम, आदिशब्द, सारशब्द, हिरण्यगर्भ समष्टि प्राण कहते हैं।

संत कबीर साहब की वाणी-

“यह बड़ाई शब्द की जैसे चुम्बक भाये।

बिना शब्द नहीं ऊबरे, कंता करें उपाय”॥

संत दरिया साहब की वाणी:-

“शब्द खोजि मन बस करै, सहज जोग है यही।

सतशब्द निज सार है, यह तो झुठी देही”॥

मृतु अंध जबहि नियरावै, चुम्बक शब्द जीव मुक्तावै।

लेई निकारी होखै नहीं पीरा, संत शब्द जो बसे शरीरा॥

“समय गया फिरता नहीं झटही करो निज काम।

जो बीता से बीतिया, अबहु गहो गुरु नाम”॥॥॥

सन्तमता बिनु गति नहीं, सुनो सकल दे कान।

जो चाहो उद्धार करो, बनो संत संतान॥2॥

मेंहीं-मेंहीं भेद यह, संतमता कर गाई।

सबको दिये सुनाये के, अबतु रहू चपाई॥3॥

भेद यह गुप्त पाना किसी ग्रन्थ से, असम्भव समझो किसी संत से।

बिन दया संतन की मेंहीं जानना इसराह को।

हुआ नहीं होता नही वो होनहारा है नहीं॥ (महर्षि मेंहीं पदावली)



ज्ञानरहित योग से भी मोक्ष प्राप्त नहीं हो सकता। अतः मुमुक्षु को ज्ञान व योग दोनों का दृढ़ अभ्यास करना चाहिए।

योगतत्त्वोपनिषद्



गरीबी हटाओ

सुश्री अदिति

सुपुत्री - श्री अवधेश प्रसाद

सहायक लेखा अधिकारी

बीमारी, भुखमरी और निरक्षरता
गरीबी की यही परिभाषा
हम सब को गरीबी के हटने की आशा।
'गरीबी हटाओ' नेताओं की
यही पहली भाषा
इनका भाषण और आश्वासन
गरीबों को झूठी आशा।
न तन पर कपड़े, न खाने को रोटी
इनके उद्धार के नाम पर
सरकार से ऐंठते हैं
नेता, रकम मोटी-मोटी।
जिन गरीबों की सीमित आय
उनके लिए चुनाव के भाषणों में
झूठे आश्वासनों की चाशनी में,
खुशहाली के सपने दिखाना ही सरल उपाय।
हर नेता के भाषण में
गरीबी पर एक अनुच्छेद होता है
और गरीबी न हटा पाने पर
हर साल नेताओं को खेद होता है।
गरीबी के नाम पर चुनाव जीत जाना
यह तो अब आम है
और चुनाव जीत कर नेता
कहते हैं कि गरीबी हटाना
तो सरकार का काम है।

गरीबी दैवी अभिशाप नहीं, मानवीय सृष्टि है। - महात्मा गाँधी

प्रजातंत्र का कमाल

श्री राम सुभग राम

से. नि. वरीय लेखाकार

सैकड़ों वर्षों से गुलाम भारत को आजाद कराने के लिए हमारे पूर्वजों ने क्या नहीं किया। अपने धन दौलत के साथ-साथ अपने प्राणों की कुर्बानी दी। इसका ज्वलन्त उदाहरण महात्मा गाँधी के अहिंसात्मक आन्दोलन, पंडित जवाहर लाल नेहरू, उनके पिता पंडित मोतीलाल नेहरू, सरदार बल्लभ भाई पटेल, नेताजी सुभाष चन्द्र बोस, वीर भगत सिंह, इत्यादि नेताओं का जन जागरण आन्दोलन, जालियाँवाला काण्ड, किससे छिपा है? हमारे पूर्वजों ने अनेक कुर्बानियाँ देकर भारत माँ की बेड़ियों को तोड़कर भारत को आजादी दिलाई।

आजादी मिलने पर अपना संविधान बना। हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाया गया, ताकि भारत को एकता के सूत्र में बाँधा जा सके। चूँकि भारत अनेक राज्यों एवं अनेक भाषाओं का देश है, इसलिए पूरे राष्ट्र के लिए एक भाषा अपनाकर हम कह सकें कि हम भारतीय हैं।

लेकिन पहले के नेताओं में थोड़ी कमी रह गई थी, जिसकी भरपाई आज के नेता कर रहे हैं। पहले के नेता राष्ट्र को अपना समझते थे, पर आज के नेता घर परिवार को राष्ट्र समझते हैं। पहले लोग धन को धर्म नहीं मानते थे, पर आज के नेता “धन ही धर्म है” के सिद्धान्त को मानते हैं। राष्ट्र आज के नेताओं के लिए गौण माना जाता है। पहले के नेता प्रजातंत्र सरकार का अर्थ जनता की सरकार, जनता के लिए सरकार एवं जनता द्वारा निर्मित सरकार (Democracy is the Government of the people for the people and by the people) मानते थे, पर आज के नेताओं ने प्रजातंत्र का अर्थ ही बदल दिया है। उनके मतानुसार प्रजातंत्र जनता विहीन, जनता से दूर एवं जनता से खरीदी हुई सरकार है। (Democracy is the Government off the people far the people and buy the people) ऐसे युग परिवर्तन के साथ-साथ, विचार परिवर्तन भी आवश्यक प्रतीत होता है। आज के

नेतागण, पहले के नेताओं से महान अवश्य नजर आते हैं। आज के नेता आजादी का पूरा-पूरा लाभ उठाना अच्छी तरह जानते हैं। पहले के लोग अपने प्राण एवं धन गवाँ कर उज्ज्वल भारत को देखना पसन्द करते थे, पर आज के नेता ऐसी गलती करना पसन्द नहीं करते हैं। आज के लोग अपने घर परिवार का उज्ज्वल भविष्य देखना ही अपना पावन कर्तव्य मानते हैं, चाहे उसके लिए जनता के धन एवं प्राण ही लेना क्यों न पड़े?

यह प्रजातंत्र का कमाल ही है कि यहाँ आदमी तो क्या, पशु-पक्षियों को भी चरने, विचरने एवं खुली हवा में साँस लेने का पूरा-पूरा अधिकार है। यह प्रजातंत्र ही है कि कोई व्यक्ति कुछ भी बोल सकता है, कहीं भी घूम सकता है। पटना शहर

को ही उदाहरण मान कर देखें, जहाँ भैंस, सुअर आदि पशुओं को इच्छानुसार घूमने विचरने, शौच करने का पूरा हक है। प्रजातंत्र में कोई कुछ भी बोल सकता है। किसी को गद्दार, देशद्रोही, चरित्रहीन, विघटनकारी कहने का पूरा हक है।

प्रजातंत्र का ही कमाल है कि कोई व्यक्ति स्वार्थी, लोभी एवं अवसरवादी बन सकता है। किसी को टांग अड़ाने का अधिकार प्रजातंत्र में नहीं है। सामाजिक दुराचार और आर्थिक भ्रष्टाचार करने की छूट प्रजातंत्र में ही है। कोई भी हत्यारा राजनीति में समा सकता है। कोई भी नेता अपने बेटा को पूरा पावर दे सकता है। जैसे गनपावर, मनीपावर आदि आदि। नेता का बेटा जो चाहे, सो कर दे, मगर सबूत नष्ट कर दे। न बचेगा सबूत और न फँसेगा सपूत। है न प्रजातंत्र का कमाल!

प्रत्येक व्यक्ति की अच्छाई ही प्रजातंत्रीय शासन की सफलता का मूल सिद्धान्त है।

राजगोपालचारी



“एक और पल”

श्री पीयूष ओझा
वरिष्ठ लेखाकार

आओ , हम कुछ बात करें,
स्त्री-पुरुष, परिवार, मोहल्ला, समाज
नेता-अभिनेता, फिल्म-फैशन,
दोस्त-दुश्मनी, धर्म-अधर्म
द्वैत-अद्वैत, पुराण-कुरान, ज्ञान विज्ञान,
शुभ -अशुभ, तमस-प्रकाश, ईमान-बेईमान
नहीं, नहीं।

सब-कुछ छोड़कर आओ हम कुछ और बात करें,
कुछ 'अटल सच' की, कुछ जीवन के 'मोल' की
तो कुछ 'मौत' के तौल की।

जिन्दगी के एक 'क्षण' की हम कीमत कितनी मानें,
एक टुकड़ा जमीन! वो दौड़-दौड़ कर बटोरी दौलत !
या फिर स्वर्णाक्षर से लिखे इतिहास में अपना नाम,
सब कुछ मिलकर भी क्या दे सकते हैं
एक और 'पल' की जिंदगी? यदि नहीं
तो फिर आओ, सब बड़ी-बड़ी बातें भूलकर,
छोटी-छोटी खुशियों में जी लें।

प्यार से मिलकर, खुलकर, हँस कर, छोटी सी यह जिंदगी जी लें।



जीवन का पहला और स्पष्ट लक्षण है विस्तार। यदि तुम जीवित रहना चाहते हो तो तुम्हें फैलना ही होगा। जिस समय तुम जीवन का विस्तार बंद कर दोगे, उसी क्षण जान लेना कि मृत्यु ने तुम्हें घेर लिया है, विपत्तियाँ तुम्हारे सामने हैं।

-विवेकानन्द

“अतीत”

श्री बंशीधर मिश्र
स० ले० अधिकारी

“अतीत” शब्द का तात्पर्य पुरानी बातों / घटनाओं को याद करना है। इसे कई लोग दुःख रोने के लिए याद करते हैं और वैसी परिस्थिति में लोग “अतीत का रोना” के नाम से जानते हैं। बल्कि सच कहा जाय तो अतीत को लोग प्रायः रोने के लिए ही व्यावहारिक तौर पर याद करते हैं।

वस्तुतः “अतीत” से उत्साही लोग सबक सीखकर अच्छी दिशाओं में कदम बढ़ाते हैं। “अतीत” अपने-आप में एक सर्वश्रेष्ठ पाठ है - अच्छी, सही राह पर कदम को बढ़ाने के लिए। कहा भी गया है:-

“अब पछताये होत क्या,
जब चिड़िया चुग गई खेत।”

अर्थ स्पष्ट है कि जब चिड़िया खेतों से दाना खाकर चली जाय तो पछताने का क्या लाभ। अब दाने चुगने की घटना को लेकर पछताना, रोना व्यर्थ है। हाँ, हम इस बीती घटना/ “अतीत” की घटना से

यह सबक जरूर सीख सकते हैं कि चिड़ियों के आगमन / आक्रमण के पूर्व ही खेतों के दानों को सुरक्षा प्रदान करने की व्यवस्था कर ली जाय।

आज की दुनिया आतंकों से भरी है। हर तरफ आतंक-ही-आतंक है। आतंकवाद के प्रभाव से दुनिया का शायद ही कोई देश प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से बचा है। अमेरिका जैसे बलशाली माने जाने वाले देश में भी 11 सितम्बर, 2001 को आतंकवादी गतिविधियाँ / कहर जग-जाहिर तौर पर दिख पड़ी है और वह है न्यूयार्क में स्थित “अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार केन्द्र भवन” (International Trade Centre Tower) और पेंटागन में स्थित “रक्षा मुख्यालय” (Defence Headquarter) को आतंकवादियों द्वारा क्रमशः पूर्ण एवं आंशिक रूप से ध्वस्त / मटियामेट कर देना। अब यहाँ यह प्रश्न अवश्य उठता है कि किन कमियों की वजह से इतनी बड़ी घटना को अंजाम दिया जा सका। कमियों का उजागर होना

आवश्यक है। इनसे इन बातों की जानकारी अवश्य ही उपलब्ध हो सकेगी कि “अतीत” की घटनाओं से यह सबक तो सीख ही ली जा सकती है ताकि भविष्य में उन कमियों को दूर किया जा सके और किसी दुर्घटना को अंजाम देने से रोका जा सके।

13 दिसम्बर, 2001 को भारतीय संसद पर किये गये आतंकवादी हमले को भी हम चाहकर भी नहीं भुला सकते हैं। अब भले ही यह “अतीत” की घटना है, परन्तु अपने-आप में इसमें रह गयी कमियाँ भावी सुरक्षा योजनाओं/ व्यवस्थाओं को लागू करने में अच्छी सबक साबित होंगी। अब निश्चित तौर पर ऐसे सुरक्षात्मक उपाय किये गये होंगे/जायेंगे जिनमें “अतीत” की मार्गदर्शक बातें समाहित होंगी। इन सारी बातों के बीच ही अभी हाल ही में श्री बलवीर सिंह जो कि पेशे से ट्रक ड्राइवर हैं तथा माननीय केन्द्रीय मंत्री श्री शत्रुघन सिन्हा के हमशक्ल हैं, द्वारा आराम से संसद भवन का चक्कर लगाकर बिना किसी अवरोध के बाहर आना, सुरक्षा प्रहरियों/अधिकारियों से लोकाचार का निर्वहन करते हुए अपने आप में “अतीत” बन गया है कि इस बारे में भी प्रकट हुई

कमियों को दूर किया जाय।

“अतीत” की बात व्यक्ति-व्यक्ति पर भी अपने-अपने ढंग से लागू होती है। आदमी अपनी निजी जिन्दगी में भी “अतीत” की भूलों / घटनाओं को यादकर सफलता के मार्ग पर बढ़ता है। जो “अतीत” की घटनाओं को रोता है उसकी जिन्दगी निश्चित ही प्रतिकूल दिशा में प्रभावित होती है।

निष्कर्षतः आदमी को “अतीत” को हमेशा सकारात्मक सबक के रूप में लेना चाहिए न कि नकारात्मक या रोने की बात के साथ में लेना चाहिए। “अतीत” को सबक के रूप में लेने वाला आदमी सफलता की ओर उत्तरोत्तर बढ़ता जाता है तथा अतीत का रोनेवाला आदमी हमेशा ही प्रतिकूल दिशा में कदम बढ़ाता है या जिन्दगी में लगभग विराम लगा देता है। कहा भी गया है - “असफलता ही सफलता की कुन्जी है” (Failure is the pillar of success)

अर्थात् “असफलता” जो “अतीत” है, ही सफलता की राह में मार्गदर्शक का काम करती है और इस तरह सफलता को कदम चूमने पर बाध्य कर देती है। अतः “अतीत” आदमी की सफलता के लिए “सर्वोत्तम पाठ” (THE BEST LESSON) है।

भविष्य को समझने के लिए अतीत का अध्ययन कीजिए।

-कल्पयूशस

बढ़ती जनसंख्या-एक समस्या एवं उसके निदान

श्री हरेराम प्रधान, व० ले०

आज के युग में यदि हम यह कहें कि बढ़ती जनसंख्या सबसे बड़ी समस्या है तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। आज विश्व बढ़ती जनसंख्या की समस्या से प्रभावित है, और उसके चलते उसका विकास प्रायः रूक-सा गया है। जिस देश की जनसंख्या जितनी ज्यादा है, वह देश उतना ही पिछड़ा हुआ है, जिस देश की जनसंख्या जितनी कम है, वह देश उतना ही आगे बढ़ रहा है, तरक्की कर रहा है। जनसंख्या की बढ़ती गति को यदि नहीं रोका गया तो वह दिन दूर नहीं जब मनुष्य को रहने के लिए मकान एवं खाने के लिए अनाज का इन्तजाम करना मुश्किल हो जायेगा, क्योंकि दुनिया के पास जमीन जनसंख्या की तुलना में कम पड़ जायेगी। अतः समय रहते हुए विश्व के सभी देशों को बढ़ती जन-संख्या पर काबू पाने के लिए ठोस कदम उठाने की जरूरत है।

जनसंख्या के बढ़ने से इसका रोजगार पर बुरा असर पड़ा है। बेरोजगारों की संख्या दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ती जा रही है, जिसके चलते सरकार के सामने विकट समस्या उत्पन्न हो गई है। सरकारी या गैर-सरकारी प्रतिष्ठानों, कार्यालयों या अन्य जगहों पर नियुक्ति हेतु 'आवश्यकता' निकलता है तो वहाँ एक-एक पद के विरुद्ध सैकड़ों-हजारों की संख्या में उम्मीदवार अपनी उम्मीदवारी दर्ज करते हैं जो नियोक्ता के लिए एक विकट समस्या हो जाती है। इसका प्रभाव समाज के हर पहलू पर पड़ता है। समाज के विभिन्न वर्ग के लोग पैरवी या घूसखोरी के जरिए उक्त पदों के विरुद्ध अपनी नियुक्ति करवा रहे हैं या करवाने की कोशिश करते हैं, जिसके चलते आज समाज में घूसखोरी की समस्या उत्पन्न हो गई है और यह समस्या समाज को, देश को अन्दर ही अन्दर खोखला करती जा

रही है। समाज में घूसखोरी या पैरवी का यह आलम है कि योग्य उम्मीदवार उक्त पदों के विरुद्ध नियुक्त नहीं हो पाते हैं, और अयोग्य तथा निकम्मा उम्मीदवार पैरवी और घूसखोरी के बल पर नियुक्त हो जाता है। इसका असर उसके काम पर भी पड़ता है, क्योंकि वह तो उसके योग्य नहीं था, फिर भी उसकी नियुक्ति हो गई, और अपने कार्य को सही ढंग से निष्पादित नहीं कर सकता है। इसका नतीजा यह होता है कि दिन प्रतिदिन उसके कार्य में गिरावट आती जाती है, और अन्त में वह कार्यालय / संस्थान अवनति के कगार पर पहुँच जाता है। अतः हम देखते हैं कि इन अवनतियों का कारण भी बढ़ती जनसंख्या ही है। यदि जनसंख्या कम रहती तो योग्य उम्मीदवार में से ही चुनकर नियुक्ति की जाती और उसे उसके कार्य में दक्षता आती, और कार्यालय / संस्थान का कार्य सुचारू रूप से योग्य उम्मीदवारों की मदद से आगे बढ़ता ही जाता, जिससे राष्ट्र का विकास होता और हमारा नाम विकसित देशों में अगली कतार में होता।

बढ़ती जनसंख्या के चलते आज सभी आदमी परेशान हैं। वे अपने बच्चों को न तो संतुलित भोजन ही दे सकते हैं,

और न ही उचित शिक्षा। जिसके घर में अधिक बच्चे हैं वह उनके भरपेट भोजन की भी व्यवस्था नहीं कर पाता है। रहने एवं कपड़ा की तो बात अलग है जब वह व्यक्ति अपने बच्चों को भर-पेट भोजन नहीं दे सकता है? उचित शिक्षा की तो बात ही अलग है। अतः बढ़ती जनसंख्या के चलते आज मनुष्य अपनी आवश्यक आवश्यकता भोजन, आवास, कपड़ा और शिक्षा को पूरा नहीं कर पाता है। बढ़ती हुई जनसंख्या की समस्या के चलते ही आज शिक्षा का स्तर इतना गिरा हुआ है। अशिक्षा का कारण भी बढ़ती जनसंख्या ही है।

बढ़ती जनसंख्या का ही प्रभाव है कि आज समाज में असामाजिक तत्व इतने अधिक बढ़ गये हैं। असामाजिक तत्व के चलते राष्ट्र का विकास भी अवरूद्ध हो गया है। असामाजिक तत्व के चलते आज समाज में भले लोगों का रहना भी मुश्किल हो गया है। वे किसी तरह से अपनी लोक-लज्जा बचाकर उन असामाजिक तत्वों से बचकर अपनी जिन्दगी जी रहे हैं। इन सबके पीछे भी बढ़ती जनसंख्या की समस्या ही है। अतः हम देखते हैं कि बढ़ती जनसंख्या के चलते अनेकानेक समस्याएँ उत्पन्न हो गई हैं।

अब हम बढ़ती जनसंख्या की समस्या के निदान पर भी गौर करें। बढ़ती जनसंख्या से निदान कैसे पाया जा सकता है? बढ़ती जनसंख्या के निदान के बारे में प्रतिदिन रेडियों, अखबार एवं दूर-दर्शन के माध्यम से लोगों को उपाय बताये जाते हैं, उसके माध्यम से जनसंख्या कम करने के उपाय बताये जाते हैं। सरकारी एवं स्वैच्छिक संस्थान बढ़ती जनसंख्या के निदान के लिए काफी कार्य कर रहे हैं और उसका प्रभाव भी अच्छा पड़ रहा है।

बढ़ती जनसंख्या से निदान पाने के लिए सबसे पहले हमें गरीब लोगों को शिक्षित करना पड़ेगा। शिक्षा के अभाव के चलते गरीब लोग नसबंदी बन्ध्याकरण आदि आधुनिक उपायों को नहीं समझ पाते हैं, और न ही उसका लाभ ही उठा पाते हैं। आज समाज के गरीब तबके के लोगों की जनसंख्या बढ़ती जा रही है। जिसका नतीजा होता है कि वे अपने बच्चों को भरपेट अनाज भी नहीं दे पाते हैं, और न ही रहने की व्यवस्था ही कर पाते हैं। आज समाज के गरीब वर्ग के लोगों के बच्चों ही अधिक असामाजिक तत्वों के बहकावे में आकर खुद असामाजिक तत्व बन जाते हैं और उसका बुरा प्रभाव पूरे समाज पर पड़ता है। अतः गरीब लोगों

को पहले शिक्षित करने की जरूरत है, तभी वे बढ़ती जनसंख्या पर रोक लगावेंगे। जबतक वे खुद इसके अच्छे और बुरे परिणामों को नहीं जान जायेंगे तब तक वे इस पर अमल नहीं करेंगे। अतः सबसे पहले उन्हें शिक्षित करना जरूरी है। इसके दो फायदे हैं - एक अशिक्षा दूर होगी और दूसरा बढ़ती जनसंख्या पर काबू पाया जा सकेगा।

गरीब वर्ग के लोगों में जन संख्या बढ़ने का दूसरा कारण यह है कि उनके पास मनोरंजन का कोई ठोस उपाय नहीं है, जिसके चलते वे बराबर संग-संग रहते हैं। उसका नतीजा यह होता है कि बच्चे जल्द-जल्द पैदा हो जाते हैं। अतः उनकी गरीबी को दूर करने का कोई ठोस उपाय करना चाहिए, जिससे वे जनसंख्या वृद्धि पर रोक लगा सकें।

कुछ दिन पहले समाचार-पत्र में आया था कि माननीय श्री राम विलास पासवान ने कहा है कि दो बच्चे से अधिक वाले व्यक्ति को लोक सभा या विधान सभा में प्रवेश पर रोक लगा देनी चाहिए। अतः सरकार को इस तरह का कानून संसद से पास कराना चाहिए कि दो से अधिक बच्चे वाले व्यक्ति को लोक-सभा, राज्य और विधानसभा का सदस्य बनने से अथवा

किसी सरकारी या गैर सरकारी प्रतिष्ठानों में नियुक्ति हेतु अयोग्य घोषित कर दिया जाय। ऐसा करने से बढ़ती जनसंख्या पर काबू पाया जा सकता है, साथ-ही-साथ उससे निदान भी हमें मिल सकता है। सरकारी कार्यालयों / प्रतिष्ठानों में काम करने वाले कर्मचारियों / अधिकारियों को हर तरह से प्रोत्साहन देने की व्यवस्था करनी चाहिए, ताकि वे परिवार-नियोजन कराने में बढ़ चढ़कर हिस्सा लें। इसके लिए उन्हें समय-समय पर प्रोत्साहन भत्ता एवं पदोन्नति में प्राथमिकता मिलने की व्यवस्था करनी चाहिए। नई नियुक्तियों में भी इसका प्रावधान होना चाहिए कि जो व्यक्ति एक या दो बच्चों तक ही अपना परिवार सीमित रखेगा

उसकी नियुक्ति प्राथमिकता के आधार पर होगी। बच्चों के दाखिलों में भी जैसे तकनीकी शिक्षा एवं प्रावैधिक शिक्षा में आरक्षण उन्हें ही मिलना चाहिए जो बच्चे भाई-बहन में एक या दो ही हों। इसका भी बढ़ती जनसंख्या को घटाने पर अच्छा प्रभाव पड़ेगा। गरीब वर्ग के लोगों को विभिन्न प्रकार के प्रलोभन जैसे मकान, दूकान एवं पैसा देकर उनकी बढ़ती जनसंख्या को दूर किया जा सकता है। आज समाज में गरीब वर्ग के लोगों में ही बढ़ती जनसंख्या की ज्यादा समस्या है। अतः इस प्रकार हम उनके सामाजिक, आर्थिक जीवन स्तर को ऊँचा उठाकर उनकी बढ़ती जनसंख्या को दूर कर सकते हैं। उन्हें शिक्षित करके ही हम इस विकराल समस्या से निदान पा सकते हैं।

हम अपने घरेलू पौधों व पशुओं के नियोजित प्रजनन में ईश्वर सदृश रहे हैं, परन्तु स्वयं अपने अनियोजित प्रजनन में हम खरगोश के सदृश रहे हैं।

-आर्नोल्ड टॉयनबी



आतंकवाद

श्री विजय प्रकाश

सुपुत्र : श्री हृदयानन्द प्रसाद

वरिष्ठ लेखा अधिकारी

आजादी मिले हो गए हमें '56' साल,
फिर भी नहीं सुधरा है देश का हाल,
कौन है इसके लिए दोषी?
क्या किसी को है इसका मलाल?
सभी अपने लिए जी रहे हैं,
कोई तो करे सबका ख्याल।
सन '48' में कबाइलियों ने मचाया कश्मीर में उत्पात,
तो सन '62' में झेला हमने चीन का विश्वासघात,
सन '65' में तो दुश्मन ने की अपने दुस्साहस की शुरूआत,
कुछ इसी तरह की सन '71' में भी बिछी थी जंगी बिसात,
कौन है इन सबका जिम्मेवार, क्या किसी ने उठायी है इसके खिलाफ आवाज?
जब सीधे लड़ाई में नहीं पा सके पार,
तो पीछे से सुना रहे है आतंकवाद की आवाज।
क्या है यह आतंकवाद और क्या है इसका रिवाज?
दुर्बल निहत्थों पर क्यों बजा रहे ये झूठी मर्दानगी का साज?
मासुमों को मार कर हो रहा है यह किस आन्दोलन का आगाज,
आन्दोलन के इस नए रूप का किसने किया ईजाद,
मौत के इस खेल को किसने नाम दिया जेहाद,
आन्दोलन की कौन सी है यह नई परिभाषा,
जिसे देख टूट रही है मानवता की आशा,

आखिर क्या है आतंकियों की अभिलाषा,
 धर्म के नाम पर क्यों कर रहे हैं ये तमाशा?
 अपने आप को कहते हैं धर्म का रक्षक,
 पर नहीं जानते, वही हैं इसके असली भक्षक,
 कोई धर्म नहीं सिखाता किसी को ऐसी सबक,
 कि फैलाओ आतंक, छूट जाये न दम जब तक।
 है कहाँ से पनप रहा यह आतंक का बीज,
 जिसने बना दिया मानवता को मरीज।
 है किसके मुख से निकली यह शैतानी आवाज,
 जिसे सुनकर हिल रहा इन्सानियत का ताज।
 है किस ओर से आ रही यह आतंक की हवा,
 जिसके छल में आकर बहक रहे हमारे नौजवाँ,
 है कहाँ से उठ रहा यह आतंक का काला धुआँ,
 जिसको देखकर ईश्वर भी यह सोच शर्मसार हुआ,
 क्या यही है उस मानव की वर्तमान छवि?

आतंक सबसे अधिक निःसत्त्व करनेवाली अवस्था है।

-महात्मा गाँधी



“किसमस”

श्री रमा प्रसाद चक्रवर्ती

आशुलिपिक

जब परमेश्वर के द्वारा ये सारी सृष्टि रची गई थी, और परमेश्वर ने जब देखा कि पूरी सृष्टि बेडौल और सुनसान पड़ी थी, तब उन्होंने प्रकृति, जल, वायु, सूर्य, पशु, पक्षी, इत्यादि का निर्माण किया; फिर, इन सबों पर, अर्थात् जाति-जाति के वन पशुओं पर, जाति-जाति के घरेलु पशुओं पर और जाति-जाति की भूमि पर रेंगनेवाले जन्तुओं पर अधिकार रखनेवाले हम मनुष्यों को अपने स्वरूप में रचा और इस तरह सबसे पहला पुरुष “आदम” और पहली स्त्री “हवा” को बनाया और उनको आशीष दिया और कहा -जाओ, फूलो, फलो और पृथ्वी में भर जाओ और उसको-अपने वश में कर लो।

उधर स्वर्गलोक में परमेश्वर के राज्य के परमेश्वर का प्रधान सेनापति “लुसिफर” जो परमेश्वर का बहुत ही प्रिय था और जिसे परमेश्वर ने बहुत सामर्थ्य दे रखी थी, वह अपने-आपको परमेश्वर से भी अधिक सामर्थ्यवाला और

ऊँचा समझने लगा। लुसिफर के मन में घमंड उत्पन्न हुआ और वह आपने-आपको ही सर्वशक्तिमान परमेश्वर समझने लगा, पर ऐसा समझते ही परमेश्वर ने उसे अपने स्वर्ग राज्य से, उसकी सारी सामर्थ्य वापस लेकर उसे धरती पर धकेल दिया। और धरती पर गिरते ही वह अपमान और ईर्ष्या से भर गया और वह शैतान बन गया, और परमेश्वर की इस सुन्दर सृष्टि को तहस-नहस करने के लिए सोचने लगा। परमेश्वर की जो सबसे उत्तम सृष्टि मनुष्य है उसी के अन्दर पाप का बीज बोना उसने शुरू किया-सबसे पहले वह “हवा” के पास गया और उसे उस उद्यान के फल को खाने के लिए भरमाया, जिसे खाने से परमेश्वर ने उन्हें मना कर रखा था। पर वह शैतान (लुसिफर) “हवा” को समझाने लगा कि परमेश्वर ने उस उद्यान के फल को खाने से इसलिए मना किया है ताकि वे उद्यान के फल को खाकर, ज्ञान पाकर परमेश्वर के समतुल्य न हो जाए। “हवा” ने शैतान के बहकावे में

आकर उस फल को खा लिया और आदम को भी वह फल खिला दिया? फल को खाते ही उनको अपने नंगेपन का एहसास होने लगा और उस शाम जब परमेश्वर उनसे मिलने आये तो वे शर्म से पेड़ के पीछे जा छुपे तो परमेश्वर ने कहा तुमलोग को मना करने पर भी तुम लोगों ने वह फल खा लिया, इसलिए मैं तेरी पीड़ा और तेरे गर्भवती होने के दुःख को बहुत बढ़ाऊँगा। तू पीड़ित होकर बालक उत्पन्न करेगी और तेरी लालसा पति की ओर होगी और वह तुझ पर प्रभुता करेगा। आदम से प्रभु ने कहा, तूने जो अपनी पत्नी की बात सुनी, और वृक्ष के उस फल को खाया इसलिए यह भूमि तेरे कारण शापित है; तू उसकी उपज जीवनभर दुःख के साथ खाया करेगा, और माथे के पसीने की रोटी-खायेगा और अन्त में मिट्टी में मिल जायेगा। इसतरह शैतान अपने काम में कामयाब हुआ और वंशानुगत ये शैतानी बीज पाप बनकर मुनष्य के अन्दर क्रोध, घृणा, हिंसा, स्वार्थ, झूठ फरेब और तरह-तरह के पापों के रूप में समाता चला गया, जिससे सारी मानवजाति हाहाकर करने लगी। सभी जगह जुल्म और अत्याचार होने लगे। जब मानव के इस आर्तनाद को परमेश्वर से देखा-सुना न गया तब उन्होंने अपने विशेष देवदूत “जिब्राइल” को “गलील” के “नासरत” में एक कुंवारी के पास

भेजा जिसकी मंगनी “दाउद” घराने के यूसुफ नाम के एक पुरुष से हुई थी। उस कुंवारी का नाम “मरियम” था उसके पास देवदूत ने आकर कहा- हे मरियम, परमेश्वर का अनुग्रह तुझ पर हुआ है और देख तू गर्भवती होगी और तेरे एक पुत्र उत्पन्न होगा और तू उसका नाम यीशु रखना। वह महान होगा और परमप्रधान का पुत्र कहलाएगा। उस मरियम ने उससे कहा कि मैं तो पुरुष को जानती ही नहीं सो यह क्योंकर होगा? देवदूत ने उसे कहा कि पवित्र आत्मा तुझ पर उतरेगा, और परमप्रधान की सामर्थ्य तुझ पर छाया करेगी इसलिए वह पवित्र जो उत्पन्न होनेवाला है; परमेश्वर का पुत्र कहलाएगा। मरियम ने कहा-देखो, मैं प्रभु की दासी हूँ, जैसी प्रभु की इच्छा, वैसा ही हो। मरियम गर्भवती हुई। सो यूसुफ गलील के नासरत नगर से यहूदिया में अपने पितामह दाउद के नगर “बैतलहम” चला गया, अपनी गर्भवती मंगेतर मरियम के साथ नाम लिखवाने। उनके वहाँ रहते हुए मरियम के जनने के दिन पूरे हुए और उसने अपना पहला पुत्र जना और उसे कपड़े में लपेटकर चरनी में रखा क्योंकि उन के लिए सराय में भी जगह न थी और इस तरह प्रभु यीशु का जन्म हुआ जो मनुष्य जाति को पापों से छुटकारा दिलाने, अशांति को शान्ति में बदलने, हिंसा को प्यार में बदलने, आत्मा को परमात्मा से

मिलाने और जो पाप मनुष्यों और परमेश्वर के बीच दीवार बनकर खड़ा था, उस दीवार को अपने खून से, अपने को बलिदान करके, मनुष्य के सारे पापों को अपने ऊपर लेकर और वो सजा जो हमें अपने पापों के कारण मिलनी थी, उस सजा को प्रभु यीशु ने निर्दोष होते हुए भी अपने ऊपर लेकर हटाया और खुद क्रुस पर चढ़ गये। उनका यह बलिदान समस्त मानवजाति के लिए असीम प्यार था। वे हम मनुष्य

को पापों से मुक्त करने, इस संसार में स्वर्ग राज्य को छोड़कर हमारे बीच अवतरित हुए। अतः क्रिसमस का संदेश है नवीनता या परिवर्तन-बुराई से भलाई में परिवर्तन, घृणा से प्रेम में परिवर्तन, हिंसा से दया में परिवर्तन, अंधकार से प्रकाश में, क्रोध से क्षमा में और इस तरह जब पतित मानव-जीवन में ऐसे परिवर्तन आते हैं, तब उसके जीवन में क्राइस्ट का जन्म होता है, और यही क्रिसमस कहलाता है।

परमात्मा हमारी बुद्धि को प्रकाश देकर स्वयं हमारी बुद्धि के अन्दर गुप्त रूप से प्रकाशित है। इसलिए वहिरंग बुद्धि को अन्तरंग में निमग्न करना ही परमात्म दर्शन है।

रमण महर्षि



नरसंहार

श्री राजू कुमार सिंह
लेखाकार

शाम के धुँधलके-से सहमा जीवन,
हर एक आवाज से डरता जीवन,
खामोश, करता दिशाकाश में,
अपने अस्तित्व की तलाश।
कल रात वाचाल बन्दूकें,
शब्द गोलियों के उगलतीं,
दूर-दूर तक जानी-पहचानी चीख,
क्षीण आशा से कौंधती।
अखबारों के मुखपृष्ठ की सज्जा,
कई रंगीन चित्रों की भरमार,
शंकाओं, आशंकाओं से जूझते,
खेत-खलिहान, स्वयं मानव और घर-द्वार।
ये साप्ताहिक चर्चाएँ और एक काफिला,
उच्चाधिकारियों, सत्ताधारियों और विपक्षियों का,
पूर्व सूची में जुड़ीं, कुछ घोषणाएँ,

गठन हो गया कई कागजी समितियों का।
 सुनता हूँ, ये बस्ती राजमार्ग से जुड़ेगी,
 होगा यथार्थ पक्के मकानों का स्वप्न,
 हर घर में बजेंगी टेलीफोन की घंटियाँ,
 नम आँखों के आगे यह नंगा जश्न।
 आतंक की ठिठुरन से सर्द लहू,
 देता है 'ग्रीन सिग्नल', नया औजार;
 सदियों के अभाव से होगी मुक्ति,
 तप्त बैरलों से, जब होगा एक नरसंहार?

मानव रक्त का प्रवाह संगीत का प्रवाह नहीं, रस का प्रवाह नहीं—एक
 वीभत्स दृश्य है, जिसे देखकर आँखें मुँह फेर लेती हैं, हृदय सिर झुका
 लेता है।

प्रेमचन्द



सिस्टर सरला'

श्री कृष्ण मुरारी जयपुरियार

लिपिक

शहर के बीचों-बीच यह 'पन्नालाल हॉस्पिटल' की विशाल इमारत शाम को कुछ और ही सुंदर दिख रही है। पर इसके अंदर मरीजों की कराह और उनके संबंधियों का क्रन्दन इसके असली रूप को बता रहा था।

शाम के छः बज चुके थे। सभी नर्सों और अन्य कर्मियों ने अपनी-अपनी ड्यूटी संभाल ली थी कि तभी एम्बुलेंस के सायरन की आवाज आई और सभी लोग सतर्क हो गए। स्ट्रेचर लेकर दो लोग दौड़ते हुए एम्बुलेंस की ओर बढ़े। एक हट्टा-कट्टा और सुन्दर युवक उम्र यही कोई 30 वर्ष के लगभग, को स्ट्रेचर पर लादते हुए उसे अन्दर की ओर लाया गया।

वहीं दूर खड़ी सिस्टर सरला उसे बड़े गौर से देख रही है और देखते-देखते कहीं खो गई। एक पुरानी याद उसके मस्तिष्क को कुरेदने लगी।

ऐसा ही दिन था, यही एम्बुलेंस था जब इससे ठीक इसी तरह का एक सुन्दर-सजीला-सा युवक को लोग एम्बुलेंस से निकालकर स्ट्रेचर पर ले जा रहे थे। डॉक्टर ने उसे देखा तो तुरंत उसे आई०सी०यू० मे रेफर कर दिया। उस पूरी तरह बेहोश युवक को 219 नम्बर का बेड मिला, सिस्टर सरला की देख-रेख में। डॉक्टर ने लगातार कई इन्जेक्शन लगाए साथ ही साथ लगातार कई स्लाइन की बोतलें एक के बाद एक। सिस्टर ने ब्लड-प्रेसर देखा जो काफी लो था। कुछ देर बाद डॉक्टर ने सिस्टर को कुछ जरूरी हिदायतें दी और चले गए। सिस्टर हर थोड़े समय के बाद उसका बी.पी. मापती और कभी नब्ज को नोट करती, कभी उसके स्लाइन की सूई को ठीक करती तो कभी उसकी नाक में लगे ऑक्सीजन की पाईप को व्यवस्थित करती। करीब आधी रात बीत चुकी थी किन्तु उसकी हालत में कोई सुधार नहीं हो पाया था। सिस्टर अपनी

कुर्सी पर बैठकर उस मरीज की ओर निहारती हुई अपने ख्यालों में खो गई कि किस तरह समाज ने उसे लाड़-प्यार से घर में पल रही एक कोमल और सुकुमार लड़की को इस हॉस्पिटल में नौकरी करने पर मजबूर कर दिया। तभी उधर से सिस्टर विद्या ने उसे पुकारा और कहा, “सरला रात के दो बज गए, चलो अब थोड़ी देर आराम कर लो।” नहीं-नहीं, मैं अभी नहीं जा पाऊँगी, तुमलोग जाओ, अभी इसकी हालत काफी नाजुक है। मैं इसे छोड़कर कहीं नहीं जा सकती हूँ- सिस्टर सरला ने कहा। अच्छा बहन, जैसी तुम्हारी मर्जी। हमलोग तो चले आराम करने, कहती हुई अन्य सिस्टर चली गई।

और इसी प्रकार उस मरीज का बी.पी. मापते, सेंसर करते और ध्यान देते हुए उसने सबेरा कर ही दिया। सबेरे डॉक्टर नायर उसकी हालत देखने आए। उन्होंने सिस्टर से कहा ‘ऐसे इसकी हालत खतरे से बाहर नहीं है, फिर भी तुम जाना चाहो तो सिस्टर पूनम को चार्ज दे जाओ, पर मैं चाहूँगा कि तुम थोड़ा ब्रेक ले-लो और इसकी केयर तुम्हीं करो, क्योंकि इस तरह के केस को तुम्हीं अच्छी तरह हैंडल कर सकती हो, आगे तुम्हारी मर्जी।’ सिस्टर ने कहा-अच्छा कोई बात नहीं सर, मैं देख लूँगी। और फिर उसने उस दिन की भी

जिम्मेदारी ले ली। दिन में फिर उसने उसी लगन से और अपनी थकान भूलकर उसकी पूरी सेवा-शुश्रूषा की। पर शाम में एकाएक उसकी हालत खराब हो गई। इस कारण रात में वह चाह कर भी उस मरीज को नहीं छोड़ पायी। और अगली रात की ड्यूटी फिर स्वयं ही ले ली।

पता नहीं, इस थकान के बावजूद उस बीमार से क्या लगाव हो गया था कि उसके लिए उसने अपने शरीर तक की चिंता नहीं की। रात भर फिर उसने बड़ी सावधानी से उसकी देख-भाल की और जब सबेरे डॉक्टर पहुँचे तो उन्होंने सिस्टर को शाबाशी देते हुए कहा - “आज तुम्हारी वजह से ही यह खतरे से बाहर आ सका वर्ना उम्मीद बहुत कम थी। खैर, अब इसे किसी कमरे में ट्रांसफर किया जा सकता है।” सिस्टर सरला ने तुरन्त कहा-डॉक्टर साहब अगर आपको कोई एतराज न हो तो इसे मेरे ही चार्ज में रखें और मैं इस लगातार ड्यूटी से थक सी गई हूँ। और कुछ दिन आई.सी.यू. से आराम लेना चाहती हूँ। डॉक्टर ने उसके चेहरे की ओर देखते हुए हामी भर दी। सिस्टर के चेहरे पर हल्की सी मुस्कान छा गई।

हाँलाकि अब वह मरीज हॉस्पिटल के एक सामान्य कमरे में था, जहाँ उसके रिश्तेदार और परिचित आ- जा सकते थे,

फिर भी सिस्टर उसकी सेवा बड़ी तल्लीनता से कर रही थी और किसी रिस्तेदार या परिचितों को वहाँ अधिक देर तक रुकने की सलाह नहीं देती थी। सिस्टर उसका ध्यान ऐसे रख रही थी मानों वह कोई गैर नहीं बिल्कुल अपना हो।

एक-दो दिन बाद मरीज थोड़ी-बहुत बातें भी करने लगा। पूछने पर उसने बताया कि वह पेशे से एक इंजीनियर था जिसने दो साल पहले ही कानपुर से इंजिनियरिंग पास की थी। और उस दिन जिस दिन वह हॉस्पिटल आया, अचानक सड़क पर एक मोटर-सायकिल वाले ने उसे धक्का मार दिया था। इस प्रकार वह सिस्टर सरला से काफी हिल-मिल गया। सिस्टर उसे प्रतिदिन सबेरे थोड़ा धूप में टहलाने ले जाती थी और इस कदर बातें करती, मानों वह मरीज सदा के लिए हॉस्पिटल में रह जाएगा।

पता नहीं, यह सिस्टर की बातों का असर था या उसकी इस अपनों जैसी सेवा और ध्यान का कि वह मरीज चार दिनों में ही मरीज से एक स्वस्थ आदमी में परिणत होता दिख रहा था।

हॉस्पिटल में उसका पाँचवाँ दिन था, जब शाम में डाक्टर नायर आए और कहा-“वाह! अब तो आप बिल्कुल ठीक हो गए हैं। अब तो आपकी छुट्टी कर देनी चाहिए, पर कल नहीं परसों, तब तक

आप कुछ और ठीक हो जाएंगे।” डॉक्टर की इस बात ने सिस्टर के चेहरे पर उदासी ला दी। इसे तुरन्त ताड़ते हुए मरीज ने कहा-डाक्टर साहब मेरे ठीक होने का पूरा श्रेय सिस्टर सरला को जाता है। उसके मुँह से इस बात को सुनने के तुरन्त बाद सिस्टर का मुरझाया चेहरा खिल गया। सिस्टर ने कहा-डाक्टर साहब मैं कल नहीं आ पाऊंगी, कल मुझे कुछ जरूरी काम है। डॉक्टर ने कहा- कोई बात नहीं, कल इन्हे सिस्टर विद्या देख लेगी।

दूसरे दिन सिस्टर सरला अपने घर में काफी विचलित-सी दिख रही थीं। कभी उसके चेहरे पर हँसी तैरने लगती तो दूसरे ही पल वह हँसी गायब हो जाती और वह कुछ सोचने लगती। वह अन्दर ही अन्दर किसी ख्याल में खो गई थी।

इधर अगले दिन सिस्टर सरला बड़ी बेसब्री से हॉस्पिटल पहुँचने के समय की प्रतीक्षा कर रही थी और जब यह समय भारी पड़ने लगा तो उसने कुछ पहले ही हॉस्पिटल के लिए घर से चल दिया। उसकी बेसब्री उसके चेहरे पर साफ झलक रही थी। हॉस्पिटल पहुँचते ही वह किसी और से नहीं मिली और सीधे उस कमरे की ओर बढ़ गई जहाँ वह मरीज एडमिट था। यह क्या? कमरा बिल्कुल खाली था उसके चेहरे की तो मानों हवाइयाँ ही उड़ गईं। वह

बेचैन-सी सिस्टर विद्या के पास पहुँची और लड़खड़ाते शब्दों में पूछा, वह मरीज? कौन, वह कमरा न० 502 वाला इंजीनियर-सिस्टर विद्या ने कहा। हाँ भई। अरे, क्या बताएं उसके घर वालों की जिद पर डॉक्टर ने उसे कल ही रिलिज कर दिया।

बस, अब क्या सुनना था। सिस्टर सरला की जुबान लड़खड़ा गई। वह कुछ

नहीं बोल सकी। उसकी डबडबायी आँखें इस सारे मंजर का मूक गवाह बनी हुई थीं।

अरी सरला, क्या हुआ, कहाँ खो गई? फिर वही याद आ गया क्या? हूँ--- नहीं, बोलो क्या बात है? अरे, बात क्या होगी, देखा नहीं, एम्बुलेंस में मरीज है, सिरियस है, आई.सी.यू. में जाएगा। जाओ, रेडी हो जाओ। अरी यह तो अस्पताल है, बहन, यहाँ रोज मरीज आएंगे और ठीक होते ही वापस अपने घर चले जाएंगे।

सेवा मनुष्य की स्वाभाविक वृत्ति है। सेवा ही उसके जीवन का आधार है। सेवा ही वास्तविक संन्यास है। संन्यासी केवल अपनी मुक्ति का इच्छुक होता है। सेवा व्रतधारी अपने को परमार्थ की वेदी पर बलि दे देता है।

प्रेमचन्द



चुनावी साल

श्री मनोज कुमार - ॥

लेखाकार

भारत की जनता है बड़ी भोली,
एलेक्शन के पहले भर कर थोड़ी झोली,
बोल के दो-चार मीठी बोली,
ये जनता भूल कर सारी गोली,
उन नेताओ की हो ली।
नेताओं ने समझ ली है यह चाल,
एलेक्शन के पहले दिखाते है अपना ताल,
शिक्षकों की निकलती है बहाली,
दारोगा का पोस्ट भी दिखता है खाली,
जातीय समीकरण की उधड़ती है खाल,
धर्म का भी बजता है झाल,
भोली जनता हो जाती बेहाल,
और भूल करके अपना सवाल,
करने लगती है, अपनों को ही हलाल।
दिखा कर अपना कमाल,
सुनकर अपने भाषण पर करताल,



ये नेता हो जाते हैं निहाल,
और जीत की खुशी के उड़ते हैं गुलाल।
फिर एक बार आ गया है चुनावी साल
पर अबकि दिखायें हम भी कुछ धमाल,
करके अपनी आँखें लाल-लाल,
खड़े कर दें हजारों सवाल
और कर दें उन्हें, उन्हीं के मंच पर भिखमंगा और कंगाल
ताकि उन्हें समझ में आये हमारा हाल,
और भविष्य में रहे न हमें कोई मलाल।

चुनाव युद्ध नहीं, तीर्थ है, पर्व है- वह पानीपत नहीं,
कुरुक्षेत्र नहीं, वह प्रयाग है, त्रिवेणी है, संगम है, सिंहस्थ
है, कुम्भ है।

-हरिभाऊ उपाध्याय



नशे से सावधान

श्री चन्द्रिका सिंह

वरिष्ठ लेखाकार

आपको शायद खराब लगेगा परन्तु आपके कल्याण की एक बात में आप लोगों से कहना चाहता हूँ। परन्तु इससे होने वाली हानि का आपको पता नहीं है। बड़े-बड़े डॉक्टरों से जो कुछ मैंने सुना है, उसके आधार पर मैं कुछ सूचना देता हूँ। आप ध्यानपूर्वक सोचें फिर आपकी बुद्धिमत्ता जैसा कहे वैसा आप करें। डॉक्टरों ने यह सिद्ध किया है कि प्रतिदिन एक बीड़ी या सिगरेट पीने वाले मनुष्य की आयु में प्रतिदिन छः मिनट कम हो जाता है। दस बीड़ी पीने वाले के जीवन का एक घंटा कम हो जाता है। सिगरेट या बीड़ी पीने वाले के रक्त में बीस मिनट के अन्दर ही तम्बाकु के धुआँ प्रदूषणों के साथ “टार” और “निकोटिन” नामक कातिल विष मिल जाते हैं। विज्ञान ने यह भी सिद्ध करके दिखाया है कि उस व्यक्ति के पास बैठने वाले लोगों को भी धुएँ से उतनी ही हानि होती है। तम्बाकु एक मीठा जहर है। जिस प्रकार दीपक के तेल को जलाकर उसका काजल बनाया जाता है; उसी प्रकार

तम्बाकु जलाकर उसके धुएँ की स्याही मनुष्य के फेफड़े आदि पर कैंसर को जन्म देती है और किसी-न-किसी अंग में कैंसर को उजागर कर देता है। जब वे चिकित्सा में जाते हैं तब लाखों रूपया खर्च करने पर कुछ सुधार होता है, तो साथ ही किडनी खराब होने लगती है। जिसके कारण पेशाब की समस्या, पेट की समस्या, तथा अन्य समस्याएँ सामने आ जाती हैं।

अतः सभी भाइयों से मेरी अपील होगी कि वे किसी तरह का गुटखा, बीड़ी, सिगरेट, गांजा, चरस, शराब अन्य नशीले पदार्थ से हर हमेशा बचें जिससे उनकी काया स्वस्थ एवं निर्मल बनी रहे। याद रहे, नशा ही नाश की जड़ है। नशा के कारण हमारे देश में आज रोगियों की संख्या बढ़ती जा रही है। दम्मा, खाँसी बीड़ी सिगरेट पीने के कारण ही होती है। टी. बी का तो इलाज है पर यह फेफड़े को अत्यधिक कमजोर बना देता है। फेफड़े में अधिक हवा नहीं मिलने के कारण काम करने में हफनी, चलने, दौड़ने में काफी दिक्कतों का सामना

करना पड़ता है। ऐसा उनका रक्त शुद्ध नहीं होने के कारण होता है। इंग्लैंड के डॉक्टर "डॉल" और "प्रो० हिल" की रिपोर्ट ने यह सिद्ध किया है कि धूम्रपान ही फेफड़े के कैंसर का मुख्य कारण है। धूम्रपान ही "हार्ट" फेल का मुख्य कारण है। इसके सेवन से आँतों में सूजन, घाव, गॉठ इत्यादि भयानक-भयानक बिमारियाँ होती हैं। डाक्टरों ने सिद्ध किया है कि जिस व्यक्ति के रक्त में दारू, अलकोहल होता है उसके बेटों के दस पीढ़ियों तक आनुवंशिक रक्त में अलकोहल का प्रभाव रहता है। आपका निर्दोष बच्चों ने क्या बिगाड़ा है जो आप उनमें खराब लक्षणों का बीजारोपण करते हैं जिससे बच्चे अपने माता-पिता को सही सम्मान नहीं दे पाते हैं। जो काम समाज में नहीं करना चाहिए वे सब करना पसंद करते हैं। आज हमारे समाज में नशा ग्रहण करने के कारण बलात्कार, हत्या, अपहरण, डकैतियाँ एवं रंगदारी इत्यादि कुकर्मों की संख्या दिन पर दिन बढ़ती जा रही है। एक कारण बेरोजगारी की समस्या भी है। उक्त अपराधों का 70% मामला न्यायालय में दर्ज है। शिक्षित बेरोजगार नवयुवकों में नशा की आदतें बढ़ती जा रही हैं, जिससे वे अपना बुद्धि-विवेक खोते हुए अनेक गलतकाम

करने पर मजबूर हो जाते हैं। वाह रे व्यसन तेरे रंग!

चाय, सिनेमा, सिगरेट, बीड़ी जब से हुई है जारी, दुनियाँ में है शोर मचा हाय बीमारी, हाय बीमारी! तेल पकौड़े गर्म-गर्म खाये, पिये बर्फ का पानी गले में टांसिल हुई गले की हानि। बुखार में संभोग करें, टी० बी० की तैयारी, खांसी में गलती करे दमों की तैयारी, चाय पिये जो बार-बार करे एक्जिमा की तैयारी साथ मिट जाय नींद, भूख और करे बकने की तैयारी, फिर बाल गिरने की बीमारी साथ पेशाव गड़बड़ी जारी। वाह रे, वाह रे नशे की तैयारी, नशे की तैयारी! नशे से होने वाले उपद्रवी रोगों का नमूना निम्न है:-

1. फेफड़ों में कैंसर
2. मुँह, गले एवं आंत में 'कैंसर'
3. हार्ट अटैक
4. पेट के रोग
5. अंधापन
6. कर्ण का सूजन
7. मूर्खतापूर्ण तर्क
8. धार्मिक हानि
9. विभिन्न चर्मरोग

अतः सभी भाइयों से अनुरोध है कि उक्त बातों को ध्यान में रखते हुए नशे से मुक्त होकर अकाल मृत्यु से बचें।

संसार की सारी सेनाएँ मिलकर इतने मानवों और इतनी सम्पत्ति को नष्ट नहीं करतीं जितनी नशा करने की आदत।

-मिल्टन

हिन्दी पखावाड़ा, 2003 - एक रिपोर्ट

-हिन्दी कक्ष

भारत के नियंत्रक-महालेखापरीक्षक के कार्यालय (मुख्यालय) से प्राप्त दिशा-निर्देश के अनुपालन में अन्य वर्षों की भाँति इस वर्ष भी दिनांक 01.9.2003 से 15.9.2003 तक महालेखाकार (ले. एवं ह०) बिहार, पटना के कार्यालय में हिन्दी पखावाड़ा का आयोजन किया गया। यह आयोजन प्रधान महालेखाकार (लेखा परीक्षा), बिहार, पटना एवं महालेखाकार (ले० एवं ह०), बिहार, पटना के संयुक्त तत्वावधान में सम्पन्न किया गया। इस पुनीत अवसर पर समारोह स्थल 'महालेखाकार भवन' को कलात्मक ढंग से बैनरों एवं फूलों से अलंकृत किया गया।

हिन्दी पखावाड़ा समारोह का शुभारम्भ दिनांक 01.9.2003 को 3.00 बजे अपराह्न में किया गया। महालेखाकार महोदय ने हिन्दी पखावाड़ा को मनाने के औचित्य एवं राजभाषा की महत्ता पर प्रकाश डाला। इस पुनीत अवसर पर उन्होंने कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों से समस्त कार्यालयीय कार्यों का निष्पादन राजभाषा हिन्दी में ही करने की अपील की।

दिनांक 02.9.2003 एवं 03.9.2003 को कार्यालय के प्रशिक्षण कक्ष में 'संयुक्त हिन्दी कार्यशालाएँ, आयोजित की गईं जिनमें 31 अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

प्रतियोगिताओं की श्रृंखला की कड़ी में सर्वप्रथम दिनांक 04.9.2003 को 'हिन्दी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता' का आयोजन किया गया जिसमें काफी संख्या में

अधिकारियों/कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। यह प्रतियोगिता काफी रोचक एवं मनोरंजक थी।

दिनांक 05.9.2003 को कार्यालय के कम्प्यूटर कक्ष में 'कम्प्यूटर पर हिन्दी टंकण' की प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें कर्मचारियों ने उत्साह से भाग लिया।

दिनांक 06.9.2003 एवं 07.9.2003 को क्रमशः शनिवार एवं रविवार होने के कारण कार्यालय बन्द था।

दिनांक 08.9.2003 को कार्यालय के प्रशिक्षण कक्ष में 'भाषण प्रतियोगिता' आयोजित की गई। इस प्रतियोगिता में "राजभाषा हिन्दी की समस्याएँ एवं समाधान" के विषय पर वक्ताओं ने काफी उमंग एवं उत्साह से अपने विचार व्यक्त किये।

दिनांक 09.9.2003 को 'स्वरचित हिन्दी काव्य-पाठ प्रतियोगिता' आयोजित की गई जिसमें कार्यालय के कवियों ने चित्ताकर्षक कवित-पाठ किया। इस प्रतियोगिता में उपस्थित श्रोताओं ने कविता-पाठ का भरपूर आनन्द उठाया।

दिनांक 10.9.2003 को 'हिन्दी संक्षेपण एवं प्रारूप लेखन प्रतियोगिता' का आयोजन किया गया जिसमें कार्यालय के अधिकारियों/ कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

दिनांक 11.9.2003 को 'हिन्दी अनुवाद प्रतियोगिता' आयोजित की गई जिसमें कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों ने काफी उत्साह से भाग लिया।

दिनांक 12.9.2003 को एक परिचर्चा "पर्यावरण समस्याएँ एवं निदान" का आयोजन किया गया जिसमें कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों ने काफी उमंग एवं उल्लास से भाग लिया। यह परिचर्चा काफी रोचक थी।

दिनांक 13.9.2003 एवं 14.9.2003 को क्रमशः शनिवार एवं रविवार होने के कारण कार्यालय बन्द था।

दिनांक 15.9.2003 को पखवाड़ा का समापन समारोह आयोजित किया गया। यह समारोह दो चरणों में मनाया गया। प्रथम चरण में श्री एस. के. जयपुरियार, व०उपमहालेखाकार (ले० एवं ह०) ने स्वागत भाषण किया। तत्पश्चात् 'हिन्दी दिवस' के उपलक्ष्य में प्राप्त माननीय गृह मंत्री जी के संदेश का वाचन किया गया। उसके उपरान्त हिन्दी अधिकारियों द्वारा कार्यालय में हिन्दी के प्रगामी प्रयोग से संबंधित वार्षिक प्रतिवेदन प्रस्तुत किया गया। तदुपरान्त समारोह में आमंत्रित माननीय मुख्य अतिथि के रूप में बिहार के सुप्रसिद्ध समालोचक डा० खगेन्द्र ठाकुर जी का सारगर्भित भाषण हुआ तथा उन्हीं के कर-कमलों से विजेता प्रतियोगियों को पुरस्कृत किया गया।

समारोह के द्वितीय चरण में भव्य कवि-गोष्ठी आयोजित की गई। इस कवि गोष्ठी, में आमंत्रित कवि-वृन्द -श्री सत्यनारायण, श्री कमला प्रसाद, डॉ. शांति जैन, श्रीमती सुभद्रा वीरेन्द्र, श्री रवीन्द्र राजहंस, श्री खगेन्द्र ठाकुर, श्री ललित कुमुद, श्री आर. प्रसाद, श्री नरेन्द्र सिंह 'नाहर' एवं श्री राजू कुमार सिंह ने अपने काव्य-पाठ से श्रोताओं का भरपूर मनोरंजन किया। श्रोताओं ने भी तालियों से कवियों का सादर सम्मान किया।

अंत में श्री मान सिंह, उपमहालेखाकार (लेखापरीक्षा) ने हिन्दी पखवाड़ा समारोह को सफल बनाने में सहयोग देने के लिए आमंत्रित कवियों के प्रति आभार व्यक्त किया तथा कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को धन्यवाद ज्ञापन करते हुए हिन्दी पखवाड़ा समारोह के समापन की घोषणा की।

हिन्दी भारतवर्ष के हृदय-देश में स्थित करोड़ों नर-नारियों के हृदय और मस्तिष्क को खुराक देने वाली भाषा है।

-डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी





हिन्दी पखवाड़ा के अवसर पर हिन्दी के सुप्रसिद्ध कवि श्री अरूण कमल जी के कर-कमलों से पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री नरेन्द्र सिंह 'नाहर'



हिन्दी पखवाड़ा समारोह, 2003 के शुभ अवसर पर 'हिन्दी दिवस' के उपलक्ष्य में संदेश देते हुए माननीय मुख्य अतिथि डॉ. खगेन्द्र ठाकुर



हिन्दी पखवाड़ा समारोह के शुभ अवसर पर आयोजित कवि-गोष्ठी में सादर आमंत्रित कवि-वृन्द



हिन्दी पखवाड़ा समारोह का आनन्द लेते हुए माननीय महालेखाकार श्री आर. के. वर्मा,
अतिथि वृन्द तथा अधिकारी एवं कर्मचारीगण